सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखा परीक्षा, (केंद्रीय),
का कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई - 400 051

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

सह्याद्रि

35 वाँ अंक वर्ष 2022

खेल-कूद संबंधी उपलब्धियाँ

अखिल भारतीय सिविल सर्विस क्रिकेट टूर्नामेंट में आर.एस.बी. मुंबई युनिट की तरफ से स्वर्ण पदक विजेता श्री स्वपनिल साल्वी / वरिष्ठ लेखा परीक्षक

पश्चिम जोन फुटबॉल टूर्नामेंट के विजेता श्री नचिकेत पालव / लेखा परीक्षक एवं अफजल अख्तर / लिपिक/टंकक

अखिल भारतीय सिविल सर्विस बैडमिंटन टूर्नामेंट में आर.एस.बी. मुंबई यूनिट की तरफ से स्वर्ण पदक विजेता सुश्री कर्मा मीना / लेखा परीक्षक

पश्चिम जोन फुटबॉल में बेस्ट डिफेंडर की ट्रॉफी लेते हुए श्री नचिकेत पालव / लेखा परीक्षक

पश्चिम जोन कैरम के द्वितीय रनर अप की ट्रॉफी लेते हुए श्री दिलेश खेडेकर, श्री जितेन्द्र काले, श्री प्रदीप बरिया, श्री निलेश जाधव, श्री राकेश भोईर, श्रीमती नंदिता शिवशरण

वर्ष 2022

अंक 35 वाँ

सत्यमेव जयते

सह्याद्रि

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय

सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा - कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 51.

मुखपृष्ठ

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्यक्त किये गए विचार उनके अपने हैं । संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है। रचना / आलेखों के संपादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे।

सह्याद्रि परिवार

संरक्षक

श्री. के. पी. यादव

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुम्बई

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिन्दी पत्रिका 35 वां अंक)

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय) का कार्यालय, मुम्बई - 400 051, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

श्री. पद्माकर कुशवाहा
निदेशक

सुश्री रचना जयपाल सिंह
निदेशक

मुख्य संपादक

सुश्री पूर्णिमा. एस.
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री. रणजीत सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी
वरिष्ठ अनुवादक

श्री. राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री. बिना कुमारी राय
कनिष्ठ अनुवादक

"पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। अत: संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।"

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचनाकार	पृ.क्र.
1.	सह्याद्रि अंक		1.
2.	सह्याद्रि परिवार		2.
3.	अनुक्रमणिका		3-4
4.	गृहमंत्री का संदेश		5-6
5.	संरक्षक की कलम से		7
6.	प्रधान संपादक की कलम से		8
7.	आपके पत्र		9-11
रचनाएँ			
8.	सी. ऐ. जी. रिपोर्ट के गलियारे से	श्रीमती सुनीता वेणुगोपाल / व.ले.प.अ	12-16
9.	जिंदगी	सुश्री नंदिता आ. शिवशरण / स. पर्यवेक्षक	17
10.	वक्त नहीं	सुश्री नंदिता आ. शिवशरण / स. पर्यवेक्षक	17
11.	किसान	श्री. रजनीश वर्मा / व. लेखापरीक्षक	18-21
12.	सृष्टि	श्री संजय ना. पालये / लिपिक / टंकक	22
13.	अपना हिंदुस्तान	श्री संजय ना. पालये / लिपिक / टंकक	22
14.	लेखा परीक्षा	श्री राकेश कुमार सिंह / स.ले प.अ.	23-24
15.	कर्म	श्री एन दळवी / ले.प.	25
16.	प्रीत की बहार	श्री एन दळवी / ले.प.	25
17.	चित्रकला	कु.लावण्या, सुपुत्री श्रीमती गार्गी करमाकर /व.ले प.अ.	26
18.	वार्षिक समारोह की कहानी एंकर की जुबानी	श्री कुमार सौरभ / डी.ई.ओ.	27-31
19.	वार्षिक समारोह झलकियाँ		32-34
20.	पृथ्वी ग्रह का ऐलियन	श्री रंजय कुमार सिंह / डी.ई.ओ.	35-36
21.	चित्रकला	सुश्री अश्विनी संतोष सुल्हुले / कु. श्रेया सवने	36

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	रचनाकार	पृ.क्र.
22.	भारत भू का गुणगान	श्री रंजय कुमार सिंह / डी.ई.ओ.	37
23.	मातृभूमि	श्री रजनीश वर्मा / व. लेखापरीक्षक	37
24.	स्कूटर से मेरी नेपाल यात्रा	श्री नारायण नामदेव गभाले / एम.टी.एस	38-39
25.	रुह वाला प्रेम	श्री राकेश कुमार सिंह / स.ले.प.अ.	40
26.	कुदरत की मार	श्री अंकुश आत्माराम बने / व. लेखापरीक्षक	40
27.	कुरुक्षेत्र	श्री हेमन्त / डी.ई.ओ.	41-42
28.	मैं और मेरी चाय	सुश्री मधु सिंह / स. ले. प. अ.	43
29.	चित्रकला	कु. ट्यूलिप सिंह सुपुत्री सुश्री मधु सिंह	43
30.	प्रश्नोत्तरी	साभार. श्री. के. पी. यादव (महानिदेशक)	44-45
31.	डॉ. अंबेडकर प्रतिमा अनावरण के छायाचित्र		46-47

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों / विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई

संरक्षक की कलम से....

कार्यालय की अर्धवार्षिक गृह हिंदी पत्रिका सहयाद्रि के 35वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा हिंदी देश को एक सूत्र में पिरोकर रखने वाली भाषा है, अतः प्रत्येक सरकारी अधिकारी/कर्मचारी का ये नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है कि वह अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करें। राजभाषा की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित है। राजभाषा पत्रिकाओं से न केवल हिंदी को बढ़ावा मिलता है अपितु कार्यालय में सृजनात्मकता में भी वृध्दि होती है। मैं यह आशा करता हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास में उत्तरोतर बहुमूल्य योगदान देती रहेगी।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

के. पी. यादव
महानिदेशक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई

प्रधान संपादक की कलम से

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका “सहयाद्रि” के 35 वें ई-संस्करण के अर्धवार्षिक अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्न्ता का अनुभव हो रहा है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका न केवल कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि को प्रतिबिंबित करती है अपितु कार्यालय के कार्मिकों को अपनी प्रतिभा दिखाने एवं अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करती है। आशा है कि यह पत्रिका कार्यालयीन कार्य के दौरान हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के साथ-साथ सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल, सभी रचनाकार एवं प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष रुप से प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति हेतु पाठको के मौलिक सुझावों का सादर स्वागत है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुश्री रचना जयपाल सिंह
निदेशक

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार, गोवा
O/o the Accountant General, Goa
'ऑडिट भवन', अल्तो परवरी, गोवा – 403 521
'Audit Bhavan', Alto Porvorim Goa-403-521
Tel: (D) 0832-2416112 Fax- 2416228, EPABX 2416224/25

पत्र सं- मले/गोवा/हि.अनु./हि.पत्रिका/2021-22/26 दिनांक: 01/03/2022

सेवा में,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
महाराष्ट्र मुंबई - 400 051

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सहयाद्रि' के तैंतीसवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सहयाद्रि' के तैंतीसवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। सहयाद्रि का यह अंक सराहनीय है। श्री कुमार सौरभ की कविता **'रियासत की किश्त'** मानवीय संवेदनाओं और सांसारिक ताने-बाने के स्याह पक्ष को उजागर करती है। श्री आदित्य कुमार की कविता **'भारतवर्ष'** में इस महान देश के गौरवशाली अतीत की अनुगूँज सुनाई देती है। सुश्री वाणी विशालाक्षी की कविता **'मैं इधर! तुम उधर'** अपनों से दूर होने की पीड़ा को चित्रित करने में सफल हुई है। श्री संजीव कुमार की रचना **'अगर शाम होती एक इंसान'**, राहुल वर्मा की **'नीम का पेड़'** सहित अन्य रचनाएँ भी पठनीय है। सुश्री हरिप्रीता की पेंटिंग दर्शनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to truth in Public Interest

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/31
दिनांक: 25/03/2022
25 MAR 2022

सेवा में,
उप निदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
महाराष्ट्र, मुंबई-400051

विषय: हिंदी पत्रिका "सह्याद्री" के 33वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "सह्याद्री" के 33वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सुश्री रचना जयपाल सिंह, उपनिदेशक (राजभाषा) की कविता "पूजा नहीं कुछ काम करो", श्री राजेश सिंह, व.ले.प. का लेख "एक बेटी की कहानी" तथा श्री कुमार सौरभ, डी.ई.ओ. की कविता "राखी के दिन आना दीदी" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
Office of the Director General of Audit (Home, Education and Skill Development)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सत्यमेव जयते

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2021-22/161 दिनांक-21.12.2021
23 DEC 2021

सेवा में

उपनिदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,
सी-25, ई ब्लॉक बी.के.सी,बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा ईस्ट, मुंबई-400051.

विषय- हिन्दी ई-पत्रिका "सह्याद्री" के 33वाँ अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सह्याद्री" के 33वाँ अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में सृजनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। एक बार पुनः हृदय से धन्यवाद्।

भवदीय,

(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271
D.G.A.C.R. Building, I.P. Estate, New Delhi-110002
e-mail : pdahesd@cag.gov.in

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
बोस रोड .सी.जे.ए 4/234, कोलकाता020 700-
फोनः ,13/12/4111/2289-033फैक्सः 4060-2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

30 MAR 2022

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/104 **दिनांकः-10.12.2021**

सेवा में,
उपनिदेशक (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,
मुंबई-400 051

विषयः- हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्री" के 33वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सह्याद्री" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री के.पी.यादव जी का आलेख **'हल्दी और कोविड-19'**, श्री विवेक सम्भारिया जी का आलेख **'मैंग्रोव (सदाबहार वन) वास्तव में खास क्यों है?'**, सुश्री रचना जयपाल सिंह जी की कविता **'पूजा नही कुछ काम करों'**, श्री राजेश सिंह जी का आलेख **'एक बेटी की कहानी'**, श्री कुमार सौरभ जी की कविता **'राखी के दिन आना दीदी'** और सुश्री स्नेहा सुथार जी की कविता ' **"क" रोना से "ड" रोना** ' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सह्याद्री" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/140 दिनांक- 27.12.2021

सेवा में,
उपनिदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,
सी-25 ,ऑडिट भवन, बांद्रा कुर्ला संकुल, बांद्रा(पूर्व),
मुंबई - 400051
ईमेल- rajbhasha.mum.pdac@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका **"सह्याद्री"** के **33वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"सह्याद्री"** का **33वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री राजेश सिंह , वरिष्ठ लेखापरीक्षक	एक बेटी की कहानी
2.	सुश्री वाणी विशालाक्षी , पी. जे , वरिष्ठ अनुवादक	मैं इधर! तुम उधर

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

---

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
, टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT NOs. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी कक्ष/पत्रि.प्रति./2021–22/196
दिनांक– 17.12.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
महाराष्ट्र, मुंबई

विषय :– हिंदी पत्रिका 'सह्याद्री' के 33वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 18.11.2021 के द्वारा, आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'सह्याद्री' के 33वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च –स्तरीय एवं प्रशंसनीय हैं। श्री विवेक सम्भारिया की रचना 'मैंग्रोव (सदाबहार वन) वास्तव में खास क्यों ?', श्री राजेश सिंह की रचना 'एक बेटी की कहानी' व सुश्री मनीषा वि.कदम की रचना ''किस्से कोरोना काल के'' बहुत ही उल्लेखनीय व प्रशंसनीय हैं।

. श्री जयपाल सिंह की कविता 'पूजा नहीं कुछ काम करो'', श्री आदित्य कुमार की कविता 'भारत वर्ष', श्री फूल सिंह ढाका की कविता 'हिंदी का रूदन'' व श्री संजीव कुमार की कविता 'अगर शाम होती एक इंसान' काफी पठनीय है। इसके अतिरिक्त पत्रिका के अंदर कार्यालयीन दर्शायी गतिविधियों की झलकियां बहुत मनमोहक हैं तथा मुख्य पृष्ठ भी आकर्षक है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक– मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

पूजा सिंह

हिंदी अधिकारी

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/209
दिनांक: 03.12.2021

सेवा में,

उपनिदेशक (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा (कैंद्रीय) का कार्यालय,
मुंबई-400 051

विषय: ई-पत्रिका 'सहयाद्री' के 33वां अंक का प्रेषण संबंधित।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित ई-पत्रिका 'सह्याद्री' के 33वां अंक की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई। इस हेतु बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक एवं सराहनीय हैं। 'किस्से कोरोना काल के', 'अब क्या जश्न मनाऊं', 'नजरिया', 'कोविड 19', 'आजादी का अमृत महोत्सव: बॉम्बे में 'रायल इंयिन नेवल' विद्रोह' तथा 'एक बेटी की कहानी' आदि रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सभी रचनाकारों को साधुवाद।

. पत्रिका को सफल एवं उच्च कोटि बनाने हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi CellNet_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

---

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/132 दिनांक: 02.12.2021

सेवा में ,
उप निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
महाराष्ट्र, मुंबई- 400 051

विषय : कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका **"सह्याद्री"** के 33 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदया,
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका **"सह्याद्री"** पत्रिका का 33वां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री के.पी. यादव कृत **"हल्दी और कोविड-19"** ज्ञानवर्धक, श्री विजय भूषण कृत **"मुंबई मेरी जान"** रूचिपूर्ण एवं श्री विवेक संभारिया कृत **"मैंग्रोव वास्तव में खास क्यों है "** रोचक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dagacchennai@cag.gov.in

कार्यालय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. 117
दिनांक:-26/11/2021

सेवा में,
उपनिदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
मुंबई -400051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 33वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 33वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री आदित्य कुमार, व.ले.प.अ. की रचना 'भारतवर्ष', श्री राजेश सिंह, व.ले.प. का लेख 'एक बेटी की कहानी' तथा सुश्री रचना जयपाल सिंह, उपनिदेशक की रचना 'पूजा नहीं कुछ काम करो' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिव्हिल लाईन्स, नागपुर – 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फॅक्स/Fax - 0712-2524130
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : cag.gov.in/ag/nagpur/en
e-mail - agaumaharashtra2@cag.gov.in

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
OFFICE OF
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR 440 001
Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 – 2560484
Email: agaeMaharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ae/nagpur/en

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रा.भा.अ./20/जा.क्र.- 89 दिनांक : 06/01/2022

सेवा में,
उप निदेशक(राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
मुंबई-400051

महोदय/महोदया,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी "सह्याद्रि" के 33वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई तदहेतु साधुवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ मनमोहक व साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है। पत्रिका में शामिल रचनाएं उत्कृष्ट हैं तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य प्रदान करेगी जो परिलक्षित हो रहा है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताएं सरस, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। इसके लिए हिन्दी परिवार को अभिनंदन ।

पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक साधुवाद तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं राजभाषा अधिकारी

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफोन: 044-24324530 फ़ैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in	INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/28/25166 दिनांक 02/09/2022

सेवा में,	To,
महानिदेशक लेखा परीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय C-25 ऑडिट भवन, बान्द्रा - कुर्ला संकुल, बान्द्रा (पूर्व) मुंबई - 400051	Office of the Director General Audit Central C-25 Audit Building, Bandra – Kurla Complex, Bandra (East), Mumbai - 400051

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका 'सहयाद्रि' का **34 वां अंक** की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'सहयाद्रि' का **34 वां अंक** प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक मे प्रकाशित **श्री कुमार सौरभ द्वारा लिखित "सब कुछ तो छीन लिया तुमने", सुश्री वाणी विशालाक्षी द्वारा लिखित "शुरु कर दी रीसाइक्लिंग अपनी", श्री मुनिनाथ यादव द्वारा लिखित "पर्यावरण प्रदूषण - समस्या और हल" और सुश्री बिना कुमारी राय द्वारा लिखित "क्यों बनते हैं अनज़ान" विशेष रूप से उल्लेखनीय है**। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
(एम. सुधाकरन)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

महानिदेशक लेखापरीक्षा (कें) का कार्यालय
Office of the D.G.A. (C), MUMBAI
को प्राप्त / Received on 14/09/2022
को अंकित किया गया / Marked to
सचिव/Secy. महानिदेशक (कें)/DGA (C)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.
Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/ 67
दिनांक: 06-09-2022

सेवा में,
निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (कैंद्रीय)
मुंबई-400051

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "सह्यद्री" के 34 वें संस्करण (पर्यावरण विशेषांक)" अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका "सह्यद्री" के 34 वें संस्करण (पर्यावरण विशेषांक)" की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, मा.निदेशक महोदय श्री पद्माकर कुशवाहा जी की रचना "उपभोग्तावाद और पर्यावरण", मा.निदेशक महोदय श्री विवेक संभारिया जी की रचना "वायु प्रदूषण-एक सर्वव्यापी संकट", श्री कुमार सौरभ की रचना "ईश-कोप की प्रतीक्षा", सुश्री बिना राय की रचना "स्वतंत्र भारत में पर्यावरण संबंधी नीतियाँ एवं कानून", सुश्री वाणी विशालाक्षी की रचना "शुरू कर दी रिसाइक्लिंग अपनी", और "मशाल बनो...मिशाल बनो", श्री राहुल कुमार वर्मा की रचना "एक शहर की दास्तां", श्री मुनिनाथ यादव की रचना "पर्यावरण प्रदूषण-समस्या और हल", आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है, जिसमें एक तरफ निरंतर ह्रास होते पर्यवारण और दूसरी तरफ एक हरित एवं खुशहाल पर्यावरण को चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर भी महासागरों के गरम होने से समुद्रों पर पड़ने वाले प्रभाव को बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। पत्रिका में सभी बाल एवं बड़े कलाकारों द्वारा पर्यावरण संबंधी निर्मित चित्रकारियाँ बहुत ही सुंदर और आकर्षक है तथा पर्यावरण को बचाने हेतु एक महत्वपूर्ण संदेश देती है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,
(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी)

आयकर लेखापरीक्षा प्रतिवेदनो में उठाए गए प्रमुख मुद्दे तथा लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई

आयकर लेखापरीक्षा प्रतिवेदनो में उठाए गए प्रमुख मुद्दे तथा उन पर लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई

1. औषधि क्षेत्र में निर्धारितियों के आंकलन पर निष्पादन लेखा परीक्षा (2015 की सीएजी की प्रतिवेदन सं.5)

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में उठाए गए मुद्दे :

इस प्रतिवेदन में लिए गए प्रमुख बिंदु अग्रलिखित हैं -

- औषधि क्षेत्र को दिए गए प्रोत्साहनों के आंकड़ों का अभाव
- औषधि क्षेत्र के निर्धारितियों के क्षेत्र-वार आंकड़ों का रखरखाव न करना
- अनुसंधान और विकास व्यय पर भारित कटौती की स्वीकृति या वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) द्वारा अनुमोदित व्यय के विवरण को अनुमोदन प्राप्त होने से पहले सत्यापित करना
- अनुबंध निर्माताओं को किए गए भुगतान पर टीडीएस की कटौती न करना,
- 80 आईसी कटौती का अनुचित लाभ उठाने के लिए फर्म में भागीदारों को वेतन और ब्याज भुगतान से संबंधित अस्पष्ट प्रावधान का लाभ उठाना
- 80आईसी कटौती का लाभ उठाने वाली इकाई के अग्रनयन घाटे / मूल्यह्रास को सहसंबंधित और सत्यापित करने के लिए तंत्र की अनुपस्थिति
- एक ही वित्त मंत्रालय का हिस्सा होने पर भी केंद्रीय उत्पाद शुल्क में घोषित टर्नओवर के साथ आयकर में घोषित टर्नओवर को सहसंबंधित और सत्यापित करने के लिए किसी तंत्र का अभाव होना

लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई:

निष्पादन लेखापरीक्षा में लिए गए उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई निम्नवत हैं -

- लोक लेखा समिति ने 2018-19 की प्रतिवेदन संख्या 136 के माध्यम से इस पर चर्चा की और निम्नलिखित सिफारिशें दी -
  - करों के उचित लेखांकन और संग्रह के लिए फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र का एक व्यापक डेटा रखा जाना चाहिए
  - वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग और राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण इसे आईटीआर के साथ जोड़ने की सुविधा के लिए इस क्षेत्र के PAN विवरण को कैप्चर करेंगे।

• अनुबंध निर्माताओं को भुगतान पर टीडीएस की कटौती सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट निर्देश जारी करें।

- वित्त अधिनियम 2022 ने आईटी अधिनियम की धारा 37 में संशोधन किया ताकि किसी भी उद्देश्य के लिए निर्धारिती द्वारा किए गए ऐसे व्यय को अस्वीकार किया जा सके जो एक अपराध है, या जो कानून द्वारा निषिद्ध है, जिसमें किसी भी लाभ या अनुलाभ प्रदान करने के लिए किए गए / स्वीकार किए गए व्यय भी शामिल होंगे जो किसी भी कानून या नियम या विनियमन या ऐसे व्यक्ति के आचरण को नियंत्रित करने वाले दिशानिर्देशों का उल्लंघन है।

2. **छद्म कंपनियों/हवाला प्रचालकों द्वारा अवास्तविक बिक्री तथा खरीद (2017 की सीएजी की प्रतिवेदन संख्या 2 का अध्याय-5)**

<u>लेखा परीक्षा में उठाए गए मुद्दे :</u>

इस प्रतिवेदन में लिए गए प्रमुख बिंदु अग्रलिखित हैं -

- उन समायोजन प्रवृष्टि प्रदाताओं के खिलाफ कार्रवाई शुरू न करना जिन्होंने अपना रिटर्न दाखिल नहीं किया था।
- समायोजन प्रविष्टि प्रदाता केस फाइलों में उपलब्ध खरीद/लाभार्थियों की जानकारी क्षेत्राधिकार मूल्यांकन अधिकारियों के साथ साझा न करना , जिसके परिणामस्वरूप नकली चालान का उपयोग करने वाले लाभार्थियों पर उचित कार्रवाई न होना।
- किसी विशेष प्रकार के उद्योग या संचालन की प्रकृति से संबंधित किसी भी तार्किक पैटर्न को लागू किए बिना अस्वीकृति की विधि जिससे काल्पनिक बिक्री और खरीद के माध्यम से काला धन उत्पन्न होना।

<u>लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई:</u>

निष्पादन लेखापरीक्षा में लिए गए उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा निम्नवत सुधारात्मक कार्रवाई की गई -

- वित्त अधिनियम 2020 के द्वारा आयकर अधिनियम 1961 में नई धारा 271 ए ए डी को सम्मिलित किया गया जिसमें प्रावधान किया गया कि सभी जारी एवं स्वीकार किए गए नकली चालानों के लिए 100 प्रतिशत जुर्माना लगाया जाएगा ।

3. **"तलाशी और जब्ती निर्धारणों पर निष्पादन लेखा परीक्षा (2020 की सीएजी की प्रतिवेदन संख्या 14)**

<u>लेखा परीक्षा में उठाए गए मुद्दे:</u>

इस प्रतिवेदन में लिए गए प्रमुख बिंदु अग्रलिखित हैं -

- मामलों का केंद्रीकरण न होने से मूल्यांकन प्रतिवेदन में उल्लिखित मुद्दों का उचित निपटान न होना ।
- फर्जी खरीद, समायोजन प्रविष्टियों और मूल्यांकन की गई आय/संशोधित आय के आंकड़ों को अपनाने के कारण परिवर्धन करते समय कोई समान रुख नहीं अपनाना ।
- उचित औचित्य के बिना समान परिस्थितियों में या तो एकमुश्त राशि के आधार पर या मनमाने ढंग से पांच प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक के विभिन्न प्रतिशत में आय वृद्धि करना ।
- अस्पष्टीकृत ऋण का आंकलन नहीं करना तथा निर्धारित दर से कम दर पर कर लगान , ब्याज की कम वसूली , अधिभार, छूट प्राप्त आय से संबंधित व्यय की अस्वीकृति, त्रुटिपूर्ण मैट क्रेडिट की स्वीकृति आदि
- संबंधित मामलों को ट्रांसफर प्राइसिंग ऑफिसर (टीपीओ) को नहीं भेजना
- चार्टर्ड एकाउंटेंट द्वारा किए गए अपराध पर कार्रवाई की कमी, समायोजन प्रविष्टि प्रदाता पर कार्रवाई में देरी,
- आईटी रिटर्न दाखिल किए बिना मूल्यांकन, तलाशी आंकलन के दौरान मूल्यांकन आदेश आदि पारित करने से पहले संयुक्त आयुक्त का पूर्व अनुमोदन नहीं लिया जाना।

<u>लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई</u>:

निष्पादन लेखापरीक्षा में लिए गए उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई निम्नवत हैं-

- वित्त अधिनियम 2022 द्वारा आयकर अधिनियम 1961 में संशोधन करते हुए एक नई धारा 79ए को शामिल किया है, जिसके तहत किसी भी अघोषित आय के खिलाफ निर्धारिती को कारोबारी नुकसान या अवशोषित मूल्यह्रास को आगे ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।
- आयकर अधिनियम की धारा 153 (एफ) का स्पष्टीकरण (xii), मूल्यांकन विंग को रिकॉर्ड के साथ मूल्यांकन प्रतिवेदन सौंपने के लिए 180 दिनों की समय सीमा निर्धारित करती है ।

- अधिनियम की धारा 149 में धारा 1 (ए) शामिल की गई है जो तलाशी और जब्ती के मामलों के मूल्यांकन या पुनर्मूल्यांकन के लिए तय समय सीमा छह साल रखी गई थी उसको संशोधित करती है।

4. **"निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र से जुडे निर्धारितियों का मूल्यांकन" पर निष्पादन लेखा परीक्षा (2017 की सीएजी की प्रतिवेदन संख्या 27)**

लेखा परीक्षा में उठाए गए मुद्दे:

इस प्रतिवेदन में लिए गए प्रमुख बिंदु अग्रलिखित हैं -

- पुनर्जांच की किसी भी प्रणाली का अभाव, संभावित करदाताओं को कर दायरे से बाहर होने की संभावना की ओर इशारा करता है।
- आईटीडी मॉड्यूल में आंकलन अधिकारियों द्वारा धारा 80 जी प्रमाणपत्रों के सत्यापन के लिए किसी भी प्रावधान का अभाव होना ।
- गैर-अस्पताल गतिविधियों से आय पर आईटी अधिनियम की धारा 80 आईबी के तहत कटौती की त्रुटिपूर्ण स्वीकृति और धारा 35 ए डी के तहत वास्तविक पूंजीकरण के बजाय प्रावधानों पर कटौती की अनियमित स्वीकृति ।
- निजी अस्पतालों, नर्सिंग होम, निदान केंद्रों आदि द्वारा चिकित्सकों को भुगतान किए गए परामर्श शुल्क की त्रुटिपूर्ण स्वीकृति ।

लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई:

निष्पादन लेखापरीक्षा में लिए गए उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई निम्नवत हैं -

- लोक लेखा समिति ने 2018-19 की प्रतिवेदन संख्या 103 के माध्यम से इस पर चर्चा की थी और निम्नलिखित सिफारिशें दी थीं -
  - नॉन-फाइलर्स की पहचान हेतु एक उन्नत विश्लेषणात्मक समाधान नियोजित किया जाना चाहिए । जिसमें वैकल्पिक दवाओं में लगे चिकित्सकों के लिए एजेंसियों और अन्य पंजीकरण एजेंसियों के पास उपलब्ध आंकड़ों का विश्लेषण किया जाना चाहिए ।
  - कर प्रोत्साहनों के राजस्व प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक सब-कोड का आबंटन हो ।

- ट्रस्टों/अस्पतालों को दी गई छूटों को न्यायोचित ठहराने और की गई परोपकारी कार्यों की जाँच हेतु पैरामीटर तय करना।
- विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों, अस्पतालों द्वारा लोक-कल्याण कार्यों से संबंधित कुछ आय को कुल आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए ।
- कर चोरी रोकने हेतु व्यावसायिक गतिविधियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करना।

5. कृषि आय से संबंधित मूल्यांकन (2019 की सीएजी की प्रतिवेदन संख्या 9)

<u>लेखा परीक्षा में उठाए गए मुद्दे</u>:

इस प्रतिवेदन में लिए गए प्रमुख बिंदु अग्रलिखित हैं -

- ➢ विशेषतः कृषि आय छूट दावों की संवीक्षा के लिए सीबीडीटी से अनुदेशों का अभाव।
- ➢ कृषि आय और कृषि भूमि से प्राप्त राजस्व एवं आय पर बिना उचित सत्यापन के छूट की अनुमति देना ।
- ➢ विभिन्न कर निर्धारण वर्षों में स्वीकृत असंगत छूट, कर निर्धारिती द्वारा दायर आईटीआर के अनुसार कृषि आय और आंकड़ा प्रविष्टि स्तर पर त्रुटियों के कारण ए एस टी प्रणाली में दर्ज की गई राशि में विसंगति ।

<u>लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई</u>:

निष्पादन लेखापरीक्षा में लिए गए उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए लोक लेखासमिति की सिफारिशें एवं विभाग द्वारा की गई सुधारात्मक कार्रवाई निम्नवत हैं-

- ➢ लोक लेखा समिति ने 2021-22 की प्रतिवेदन संख्या 49 के माध्यम से इस पर चर्चा की और निम्नलिखित सिफारिशें दीं -
  - कम्प्यूटरीकृत भूमि अभिलेखों को एकीकृत करना ताकि सत्यापन के लिए अपेक्षित जानकारी आसानी से उपलब्ध हो सके।
  - आईटीबीए में एक मॉड्यूल विकसित करना जहां लंबित मामलों के संबंध में की गई कार्यवाई की स्थिति की अद्यतित प्रतिवेदन तैयार हो और आंतरिक निगरानी को सुविधाजनक बनाने के लिए नियमित अंतराल पर उस प्रतिवेदन को पर्यवेक्षी अधिकारियों के साथ साझा किया जाय ।

ज़िंदगी

एक ही कलर का ड्रैस पहन कर हम लगते थे कितने अच्छे
स्कूल लगता था पोल्ट्री फार्म और हम सब मुर्गी के बच्चे।

मुझको समझ ना आया आज तक टीचर का ये फंडा
हम बना देती थी मुर्गा और खुद कॉपी पे देती थी अंडा।

जब बचपन था तो जवानी एक सपना था
जब जवान हुए तो बचपन एक जमाना था।

जब घर में रहते थे,
आजादी अच्छी लगती थी
आज आजादी है फिर भी
घर जाने की जल्दी रहती है।

स्कूल में जिनके साथ झगड़ते थे
आज उन्ही को इन्टरनेट पे तलाशते हैं।

खुशी किस मे होती है
ये अब पता चला है।

बचपन क्या था
इसका एहसास अब हुआ है
काश बदल सकते हम
जिन्दगी के कुछ साल
काश जी सकते हम।

जिंदगी फिर से एक बार

वक्त नहीं

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।

रात दिन दौड़ती दुनिया में
ज़िन्दगी के लिए वक्त नहीं।

माँ की लोरी का एहसास तो है
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।

सारे नाम मोबाइल में हैं
पर दोस्तों के लिए वक्त नहीं।

गैरों की क्या बात करें
जब अपनों के लिए वक्त नहीं।

आँखो में है नींद बड़ी
पर सोने को ही वक्त नहीं।

दिल है गमों से भरा हुआ
पर रोने को भी वक्त नहीं।

पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े
की थकने का भी वक्त नहीं।

हर पल जिंदा रहने के लिए मरनेवालों को
जीने के लिए भी वक्त नहीं।

श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण
सहायक पर्यवेक्षक

किसान

(एक लघु उपन्यास)

सिर पर फटे पुराने कपड़े में खाना बांध कर, हाथ में पानी लिए सुगनी अपने पति मंगरु के लिए खाना लेकर खेत की ओर बढ़ती चली आ रही थी साथ में उसके पीछे-पीछे साधारण कपड़े में एक सज्जन व्यक्ति चला आ रहा था। एक बरगद के पेड़ की छांव में खाना रखते हुए सुगनी ने अपने पति को आवाज दी-

"अजी सुनते हो, आपको कोई खोज रहे हैं और खाना भी लेकर आई हूं।"

मंगरु ने खेत में काम करते हुए आवाज दी -

"हां मै आता हूं।"

कुछ देर के बाद सुगनी ने पुनः आवाज दी-

"अजी नहीं सुनते हो, बाबू साहब जल्दी बुला रहे हैं।"

मंगरु सोच रहा था कि दोपहर की धूप चढ़ने से पहले अधिक से अधिक गेंहू की कटाई कर ले लेकिन पत्नी द्वारा बार-बार आवाज लगाने पर बोला-

"हां हां, मैं आ रहा हूं"

बेचारा मंगरु, काम को छोड़कर पसीने से पूरा तन सराबोर किए, लड़खड़ाते पैरों पर दौड़ा चला आया। आते ही अपने सिर पर फटे पुराने तौलिए से बंधी पगड़ी को खोलकर, चेहरे पर बहते हुए पसीने को पोछते हुए अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम साहब कहते हुए उस सज्जन का अभिवादन किया। बहुत सालों से खेत की मालगुजारी नहीं चुकाने के कारण उसे मन ही मन डर लग रहा था कि पता नहीं ये साहब कौन हैं और किस लिए आए हैं। मन में चल रहे कौतूहल के बीच मंगरु ने हाथ जोड़े और बोला-

"हां साहब बोलिए, आप कौन हैं और इस गरीब दुखिया के पास किस लिए आए हैं?" सज्जन व्यक्ति ने हाथ जोड़कर मंगरु का अभिवादन स्वीकार किया और बोला-

"बातें बाद में करुंगा पहले बाप बैठिए और हाथ मुंह धोकर खाना खाइए।"

70 के उम्र के इस पड़ाव में वह अपने कांपते हाथों से पानी का ग्लास उठाकर हाथ मूंह धोने लगा, तब तक सुगनी खाने की गठरी को खोलते हुए थालों में बाजरे और गेहूं की मोटो मोटी रोटियां, बथुआ का साग और नमक मिर्ची परोसते हुए उसके आगे बढ़ा दी। खाना को बिना देखे हुए मंगरु सुगनी से बोला-

"साहब के लिए भी खाना परोसना।"

"नहीं नहीं आप खा लीजिए, मै अभी अभी खाना खाकर आया हूं।" उस सज्जन ने मना करते हुए बोला।

“नहीं साहब कुछ तो खाना ही होगा।” मंगरु ने जोर देते हुए कहा।

सज्जन व्यक्ति मन ही मन सोचने लगा, पता नहीं अगर मैं नही खाऊंगा तो वे अपने मन में क्या सोचेंगे ? वे अपने आप में अपमान महसूस करेंगे क्या, इसलिए खाने की इच्छा न होते हुए भी ठीक है, आप कह रहे हैं तो लाइए, कहते हुए सज्जन व्यक्ति ने खाने के लिए हामी भर दी लेकिन बस थोडा दीजीएगा।

थाली आगे खींचते हुए मंगरु ने सुगनी से कहा-

“अरे भिन्डी की सब्जी नहीं बनाई क्या ?”

“नही जी, घर में नमक खत्म हो गया था इसलिए भिन्डी को कालू राम के यहां बेचकर उसके बदले नमक ले लिया।” कहते हुए सुगनी ने ग्लास में पानी डालकर आगे बढ़ाया।

“अरे हा, तुम खाना खाइ कि नहीं ?” खाते खाते मंगरु बीच में ही बोल पड़ा।

“नहीं जी, पहले आप लोग खा लीजिए, फिर मैं खा लूंगी।” सुगनी ने कहा।

“देखो, सूरज कहां आ गया और अभी तक खाना नहीं खाइ हो ?” मंगरु ने सुगनी से कहा।

“आपके खाए बिना मैं कैसे खा लेती ?” सुगनी ने उत्तर दिया।

“तुम भी हो न....,” मंगरु प्यार भरी नजरों से सुगनी को निहारते हुए बोला, “और हां गाय - बैल को खाना दे दी थी न ?”

“हां हां, सब को खाना दे दिया था।” सुगनी ने बोला।

मंगरु इस लिए पूछ रहा था कि वह सुबह 4 बजे ही ठंडे मौसम में गेंहू काटने के लिए खेत की ओर निकल पड़ा था। खाना खाने के बाद मंगरु गमछा से हाथ पोछते हुए बोला-

“हां साहब, अब बोलिए,” कहते हुए आपस में बातें करने लगा और सुगनी थाली धोकर खाना खाने लगी।

“सुना है आपके दोनों बेटे बड़े ओहदे पर आसीन हैं ?” उस सज्जन ने बात चीत के सिलसिले को आगे बढ़ाया।

“हां साहब, आपने ठीक ही सुना है।” दुखी मन से बोलते हुए मंगरु ने कहा लेकिन सुख कहां नसीब में है ? मै पहलें भी खेती बाड़ी ही करता था और आज भी खेती बाड़ी ही कर जीवन गुजर बसर कर रहा हूं साहब। साहब आप अपना परिचय नहीं दिए और अचानक मेरे पास आने का कारण नहीं बताया, मंगरु ने साहब की ओर देखते हुए कहा।

बात करने की शैली, चेहरे पर साफ झलकती उदासी और मन की भावनाओं को देखते हुए, आने के प्रयोजन को मन में ही रखते हुए सज्जन ने कहा,

“चाचा, आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं आपके बड़े बेटे बुधन का बचपन का दोस्त गोलू हूं, याद आया ? जब आप स्कूल में फीस जमा कराने जाते थे तो मेरे लिए चाकलेट ले कर आया करते थे, याद आया ?”

“हां हां, बेटे याद आया। बोलो बेटा कैसे हो ? सब ठीक ठाक है न ? शादी विवाह किया कि नहीं ? अभी क्या कर रहे हो ? और तुम्हारे पिता जी कैसे है ?” मंगरु लगातार प्रश्न पर पशन किए जा रहा था। बीच में हीं एक लम्बी सांस लेते हुए दुखी मन से गोलू ने बोलना शुरु किया-

“हां चाचा, शादी विवाह तो हो गया है और बच्चे भी हैं और स्कूल जाने लायक हो गये हैं। पिछले साल पिता का देहांत भी हो गया और छोटा भाई लाखन अपने परिवार के साथ शहर में जाकर बस गया है। कुछ काम न मिलने के कारण मैं बेरोजगार हूं, बहन की शादी में जमीन पहले ही बिक जाने के कारण जमीन भी उतनी न बची कि खेती बाडी कर बच्चों की अच्छी तरह परवरिश करते हुए उच्च शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में पढ़ा सकूं, बस किसी तरह जिंदगी गुजर बसर हो रही है,

चाचा। कुछ काम के सिलसिले में इधर से गुजर रहा था, तो सोचा आपसे मिलते हुए आपका हाल चाल लेता चलूं।"

दसअसल, गोलू का ननिहाल बुधन के गांव में ही था और प्रसव अवस्था में ही गोलू की माता फगुनी का देहांत हो जाने के कारण गोलू ने अपने ननिहाल घोरैईया में ही रहकर आठवीं तक की पढ़ाई पूरी की। उसके बाद गोलू अपने गांव चरमोरा चला गया और वहां अपने पिता के साथ खेतों में हाथ बंटाने लगा। गोरा, लम्बा और छरहरा कद होने के कारण साधारण कपड़े मे भी गोलू साहब के जैसा दिखने में लग रहा था इसलिए मंगरु ने गोलू को पहले साहब कह कर पुकारा था। जब वर्षों बाद गोलू को मालूम चला कि उसका बचपन का दोस्त बुधन, सरकारी नौकरी में बहुत बड़े पद पर है तो वह मदद की लालसा लिए मंगरु के पास इसलिए आया था कि, शायद अपने पिता के कहने पर बुधन गोलू को छोटी मोटी नौकरी दिलाने में मदद करेगा लेकिन यहां आने पर मंगरु की दयनीय स्थिति देखकर गोलू का मन व्यथित हो गया और आने के प्रयोजन को मन में ही दफन करने का औचित्य समझा। दो दो बेटों को ऊँचे पद पर कार्यरत होते हुए भी मंगरु काका के घर की माली हालत ऐसी थी कि दो वक्त की रोटी के जुगाड़ के लिए जेठ की तपती धूप और पूस माह की कंपकंपा देने वाली ठंडी हवा में भी काम करने के लिए वो मजबूर थे। दोनो बेटे गरीबी के दिन को भुलाकर, अमीरों की चकाचौंध दुनिया में जा बसे थे। वे बीते हुए पल को भूल गये थे कि किस प्रकार खेतों में कड़ी मेहनत कर पिता ने पढ़ा लिखा कर एक काबिल इंसान बनाते हुए इस मुकाम तक पहूंचाया था। पिता अपने तन को फटे पुराने कपड़े से भले ही ढक लिया करते थे लेकिन अपने बेटो के तन पर कभी भी फटे कपड़ा देखना पसंद नहीं करते थे। अपनी खुशियों और ख्वाहिशों को त्यागकर हर पल बेटों की खुशियां देखने और उनकी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए खेत में दिन रात मेहनत करते थे लेकिन आज वो सब भूलकर दोनों बेटे अपने परिवार एवं बच्चों संग नई दुनिया में रंग गये थे। दोनों बेटे, अपने माता पिता से घर आकर मिलना और बातें करना तो दूर, किसी से हाल चाल पूछना भी नागवार समझते थे।

बूढ़ी हो चुकी सुगनी घर में चूल्हा चौका करने और जानवरों को खाना खिलाने के बाद, आलस और थकान के कारण ऊंघते हुए उसी बरगद के पेड़ की छांव में अपना आधा आंचल बिछाकर, वह ज्यों ही सोई थी कि मंगरु की नजर अचानक खेत की ओर गयी, देखा कि कुछ बकरियां फसल को खा रही हैं, वह अपनी पत्नी को आवाज दिया-

"अरे बुधन की माई, सुनती हो बकरी गेंहू खाए जा रही है, जल्दी जाओ।"

बेचारी सुगनी अधकचे नींद में हड़बड़ा कर उठती हुई हट हट की आवाज लगाते हुए खेत की ओर दौड़ी।

"और चाचा दोनों बेटे अच्छे है न ? शादी विवाह दोनों का किए की नहीं ? और हां, आपकी तीनों लाडली बेटियां कहां और कैसी हैं ? सब कुशल मंगल से है न ?" कहते हुए गोलू ने बात चीत के क्रम को जारी रखा।

"हां बेटा, सभी कुशल मंगल से है और सब लोग अपनी घर गृहस्थी में व्यस्त है। कभी कभी जरुरत पड़ने पर बेटी को बुला लेता हूं। अभी कुछ दिन पहले हीं बुधन की मां बीमार पड़ गई थी तो छोटी बेटी आई थी।" मंगरु बोलते ही जा रहा था कि गोलू "अच्छा अच्छा, मंगली आई थी," कहते हुए मंगरु को बीच मे हीं रोकते हुए बोला।

मंगरु ने अपना सिर हिलाते हुए हां कहा।

फिर गोलू ने बड़ी और मंझली बेटी के बारें में पूछते हुए कहा कि-

"सनिचरी और मधुआ नहीं आती है क्या ?"

"उन दोनों को आए हुए बहुत दिन हो गया है। भला आज के युग में किस को घर गृहस्थी से फुर्सत मिलती है कि वह अपने मां बाप से मिलने के लिए हमेशा मायके आ सके। सब अपने अपने परिवारिक जिम्मेदारियों में बंधकर घर गृहस्थी में व्यस्त हैं। हां, कभी कभी आ जाया करती हैं।" कहते हुए मंगरु, फिर बेटे के बारे में कहने लगा कि बड़े बेटा बुधन को बगल के गांव में ही अच्छा घर-घराना देखकर शादी किया और छोटा बेटा गुरुआ स्वंय अपनी पसंद से शहर के एक अमीर घर की लड़की

से शादी कर लिया।

अपने दिल के दर्द और बेटे की बुराई को छुपाते हुए मंगरु बोलते जा रहा था कि दोनों बेटे शहर में ही अपनी अपनी घर गृहस्थी बसा लिये है। काम और परिवारिक जिम्मेदारीयां निभाने की व्यस्तता के कारण कभी कभार दोनों बेटों से बात हो जाया करती है।

लेकिन, भला दर्द और सच्चाई छुपती कहां है ? बात करते करते मंगरु की आंखें भर आईं और गला रुंध गया। यह देखकर गोलू का मन व्यथित हो गया। गोलू ढांढस बंधाते एवं सांत्वना देते हुए बोला-

"जिसका कोई नहीं उसका उपर वाला होता है काका, कभी जरुरत पड़े तो आप अपना बेटा समझते हुए हमें याद कर लिया करिएगा। काका, मै भी आपके बेटे के समान हीं हूं।"

बात करते करते बहुत समय हो गया था, धूप भी बहुत तेजी से बढ़ती जा रही थी इसलिए गोलू ने मंगरु से कहा-

"अब हमें जाने की इजाजत दीजीए काका। बात चीत करते करते इतना समय कैसे बीत गया पता ही नहीं चला! काका, अपना और काकी का ध्यान रखिएगा। अब मै चलता हूं।

सुगनी काकी, जो खेत मे बकरी हांकने गई थी, तो वो वहीं गेहूँ काटने में लिप्त हो गई थी। गोलू दूर से ही काकी को आवाज लगाया-

"काकी, मैं जा रहा हूं।"

"आ रही हूं बेटा," कह कर सुगनी काम छोड़कर आई।

दोनों ने एक स्वर में कहा," ठीक है बेटा फिर कभी इधर से गुजराना तो मिलते जाना।" " हाँ चाचा, जरुर आऊंगा," कहते हुए गोलू दोनों का चरण स्पर्श कर प्रणाम किया और अपने घर की ओर चल पड़ा। गोलू के जाने के बाद मंगरु और सुगनी आपस में बातें करने लगे-

"बेचारा कितना अच्छा है, हम लोगों को अभी तक याद करता है, हम लोगों से मिलने के लिए इतनी धूप में भी खेत में मिलने आ गया", वगैरह वगैरह। दोनों आपस में बाते करते हुए तपती धूप में गेहूँ की कटाई में लिप्त हो गये। उधर गोलू मन में सोचते जा रहा है कि समय के साथ दोस्त कितना बदल गया है....। वह पूरा रास्ता मन ही मन सोचते जा रहा है कि "सब परिंदें उड़ गए, धीरे धीरे छोड़कर। बागवाँ अब अकेला है, उम्र के इस मोड़ पर।" पता नहीं इन दोनों की किस्मत में विधाता ने क्या लिखा है..... सोचते सोचते गोलू अपने गांव में प्रवेश कर गया।

धन्य है ऐसे किसान एवं माता पिता जो स्वयं दुख झेलते हुए, बिना किसी शिकवा शिकायत के निस्वार्थ भाव से अपनी संतान को एक ऊंचाई पर पहुंचाकर भी उसे खुश देखना चाहते है।

"सभी किसान एवं माता पिता को सधन्यवाद समर्पित।"

(नोट : इस लेख के सभी पात्र काल्पनिक है और लेखक ने इस लेख के माध्यम से समाज आधारित घटनाओं को प्रकट करने का कोशिश की है। इस लेख में व्यक्त विचार लेखक का अपना है, इससे संपादक मंडल का कोई लेना देना नहीं है।)

रजनीश वर्मा
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

सृष्टि

हाड़ –मांस का मानव बैठा
मद्धिम मन सकुचाया है।।
उसे नहीं पता कि क्यों
इस जीवन में आया है।

तन पर वस्त्र नहीं है उसके
हाड़–हाड़ दिख आया है।
हाड़–मांस का मानव बैठा
मद्धिम मन............।।

सुतली से धागा काटकर
ऐसा मोड लगाया है
लगता नहीं था सूत जैसा
सबका मन भरभाया है।।

सूत–सूत को योग–योग कर
ऐसा वस्त्र बनाया है।
जो पहना वो ये नहीं जाने
किसने इसे बनाया है।
हाड़–मांस का मानव बैठा
मद्धिम मन............।।

जिसने भी वो वस्त्र पहना है
उसे नहीं यह याद आया है।
जिसने वस्त्र बनाया है
उस कृति की क्या काया है।
हाड़–मांस का मानव बैठा
मद्धिम मन............।।

अपना हिन्दुस्तान है

आग उगलता सूर्य कहीं पर, और कहीं शीतल रातें।

कहीं है सर्दी, कहीं है गर्मी, कहीं है रिमझिम बरसातें।

कहीं है गेहूँ, कहीं है मक्का, कहीं धान ही धान है।

कहीं नारियल मीठे-मीठे, कहीं चाय बागान है।

कहीं सेब से लदे वृक्ष हैं, कहीं घनी अमराई है।

कहीं गगन को छूते पर्वत, कहीं भयानक खाई है।

कहीं है उपवन जंगल झरने, कहीं पे रेगिस्तान है।

कहीं दिवाली दुर्गापूजा, कहीं है पोंगल या ओणम।

कहीं है कत्थक, कहीं कथकली, गरबा या भरत नाट्यम्।

तरह-तरह की भाषा बोली, खानपान परिधान है।

लेकिन दिल से एक सभी, भारत माँ की संतान है।।

दयाधर्म की, शांति प्रेम की, रीति सिखाई है हमने।

साक्षी है इतिहास विश्व को, राह दिखाई है हमने।

दसों दिशाओं में, युग-युग से, गूँज रहा जयगान है।

सचमुच सारे जग से अच्छा, अपना हिन्दुस्तान है।

श्री. संजय ना. पालये
लिपिक / टंकक

लेखा-परीक्षा

"ऑडिट" शब्द का आविर्भाव लैटिन शब्द "ऑडियर" (Audire) से हुआ है, जिसका अर्थ है "सुनना" (To hear)। प्राचीन समय में लेखा-परीक्षक, मालिकों या अधिकारियों के लिए, लेखा के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की मौखिक रिपोर्टे सुनते थे और रिपोर्ट की सटीकता की पुष्टि करते थे। कालान्तर में ये भूमिका लिखित अभिलेंखों को सत्यापित करने के लिए भी विकसित हो गई। हिंदी में इस शब्द का अर्थ है लेखा-परीक्षा।

सन 1840 से पहले

लेखा परीक्षा की पहले की प्रथाएं हालांकि अच्छी तरह से प्रलेखित नहीं है, परन्तु लेखा-परीक्षा के अस्तित्व के लिए प्रमाण विद्यमान हैं। प्राचीन काल में जाँच गतिविधियों के रुप में चीन, मिश्र, भारत और ग्रीस की प्राचीन सभ्यता में लेखा-परीक्षा मौजूद थी। प्राचीन ग्रीस में पाई जाने वाली जाँच-गतिविधियाँ वर्तमान ऑडिटिंग के सबसे निकट प्रतीत होती हैं। पहले दर्ज किए गए लेखा-परीक्षक प्राचीन फारस (522 से 486 ईसा पूर्व) के राजा डेरियस के जासूस थे। इन लेखा-परीक्षकों ने प्रांतीय क्षेत्रों के व्यवहार पर जाँच करने के लिए "राजा के कान" के रुप में कार्य किया। 1494 में लुका पसिओली ने वेनिस, इटली में व्यापारियों द्वारा उपयोग की जाने वाली लेखांकन की "दोहरी प्रविष्टि बहीखाता पद्धति" पर पुस्तक प्रकाशित की। यह लेखांकन पर पहली पुस्तक थी।

सन 1840 – 1920 के दशक

आधुनिक लेखा-परीक्षा 1844 में शुरु हुई, जब ब्रिटिश संसद ने संयुक्त स्टॉक कंपनी अधिनियम पारित किया। पहली बार, अधिनियम में यह आवश्यक था कि निदेशक, एक लेखा-परीक्षित वित्तीय विवरण, बैलेंस शीट के माध्यम से शेयरधारकों को रिपोर्ट करें। 1844 में लेखा-परीक्षक को लेखाकार या स्वतंत्र होने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन 1900 में एक नया कंपनी अधिनियम पारित किया गया, जिसके लिए एक स्वतंत्र लेखा-परीक्षक की आवश्यकता थी। पहला सार्वजनिक लेखाकार संगठन, एडिनबर्ग में, सोसाइटी ऑफ अकाउंटेंट्स था, जिसका गठन 1854 में हुआ था। "अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ पब्लिक अकाउंटेंट्स" का गठन 1887 में हुआ था, जो बाद में अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउंटेंट्स (एआईसीपीए)" बन गया।

1930 तक ऑडिटिंग लेन-देन उन्मुख था। याणी यह उन प्रक्रियाओं पर केंद्रित है जिनका पालन लेनदेन को संसार्धित करने के लिए किया जाना था, ये प्रक्रियाएं काफी हद तक आंतरिक साक्ष्य पर निर्भर थी।

सन 1920-1960 के दशक

लेखा-परीक्षा की अमेरिकी प्रक्रिया 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में, संपत्ति और देनदारियों (Asset & Liability) के साक्ष्य एकत्र करने की प्रक्रिया के रुप में विकसित हुई, जिसे अक्सर बैलेंस शीट ऑडिट के रुप में संदर्भित किया जात है। गलत रुप से या व्यापक भ्रामक वित्तीय रिर्पोटिंग हुई जिसके परिणामस्वरुप 1929 में स्टॉक मार्केट क्रैश हो गया। 1933 और 1934 के अमेरिकी प्रतिभूमि अधिनियमों ने प्रतिभूति और विनिमय आयोग (SEC) बनाया, जिसने संयुक्त राज्य में प्रमुख स्टॉक एक्सचेंजों को विनियमित किया। इन कानूनों ने दुनिया भर में ऑडिटिंग को बहुत प्रभावित किया। न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज या अमेरिकन स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों का व्यापार करने की इच्छुक कंपनियों को लेखा परीक्षित आय विवरण और साथ ही बैलेंस शीट जारी करने तथा वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति की निष्पक्षता पर जोर दिया गया, और लेखा-परीक्षक की भूमिका, प्रतिवेदन (Report) की निष्पक्षता को सत्यापित करने की थी।

सन 1960 - 1990 के दशक

लेखा–परीक्षकों के सभी कर्तव्यो में प्रमुख, यह सुनिश्चित करना था कि वित्तीय विवरण निष्पक्ष रुप से प्रस्तुत किए गए थे। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा के संबंध में लेखापरीक्षकों की भूमिका सामान्यत: पहले जैसी ही बनी रही।

1970 के दशक में ऑडिट दृष्टिकोण में बदलाव देखा गया। यह बदलाव "पुस्तकों में लेनदेन को सत्यापित करने" से बदल कर "सिस्टम पर भरोसा करना" था। ऐसा परिवर्तन लेन–देन की संख्या में वृद्धि के कारण हुआ, जो कंपनियों के आकार और जटिलता में निरंतर वृद्धि के परिणामस्वरुप हुआ, जहां लेखापरीक्षकों के लिए लेनदेन सत्यापित करने की भूमिका निभाने की संभावना नहीं थी। नतीजतन, इस अवधि में लेखा–परीक्षकों ने अपनी लेखा–परीक्षा प्रक्रियाओं मे नियंत्रण पर बहुत अधिक निर्भरता रखी थी। जब कंपनी का आंतरिक नियंत्रण प्रभावी था, लेखा–परीक्षकों ने विस्तृत तत्व परीक्षण (Detailed Substance testing) के स्तर को कम कर दिया।

1980 की शुरुआत में लेखा–परीक्षकों के दृष्टिकोण में बदलाव हुआ। दरअसल आंतरिक नियंत्रण प्रणाली का मूल्यांकन एक महंगी प्रक्रिया के रुप में पाया गया और इसलिए लेखा–परीक्षकों ने अपने प्रणाली परीक्षण के काम में कटौती करना शुरु कर दिया और विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं का अधिक से अधिक उपयोग करना शुरु कर दिया। इसका एक परिणाम 1980 के दशक के मध्य में जोखिम–आधारित लेखा–परीक्षा (Risk Based Auditing) का विकास था। जोखिम आधारित लेखा–परीक्षा एक ऑडिट दृष्टिकोण है जहां एक ऑडिटर उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेगा जिनमें त्रुटियाँ होने की अधिक संभावना होती है।

सन 1990 के दशक से वर्तमान तक

1990 के बाद से पूरे विश्व में कई वित्तीय घोटाले सामने आये, जिसमें कई बार लेखा–परीक्षा कंपनियो को भी संलिप्त पाया गया। आज की लेखा–परीक्षा का परिणाम बहुत ही विस्तृत है, जहाँ न सिर्फ वित्तीय रिपोर्टो, बैलेंस शीट की लेखा–परीक्षा होती है, अपितु कर संचय, योजनाओं की समुचित अनुपालना, आयत निर्यात के नियम, सामाजिक और पर्यावरण सम्बंधित कारकों को भी लेखा–परीक्षा की परिधि के अंदर शामिल कर लिया गया है। पुराने अनुभवों से सीख कर ज्यादा बेहतर कानून बनाये गए हैं। लेखा–परीक्षा के स्टैण्डर्ड भी बनाये गए हैं, जो सभी पर समान रुप से लागू होते हैं।

ऐसा कहा जा सकता है कि भले ही लेखा–परीक्षा का जन्म व्यवसाय के वित्तीय स्वास्थ्य को जानने के लिए हुआ था परन्तु समय के साथ यह, अब आधुनिक शासन प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है और न सिर्फ सरकार या व्यवसाय वरन आम जनता के जीवन को भी बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रहा है।

श्री. राकेश कुमार सिंह,
स.ले.प.अ.

कर्म

रात हो तो दिन है होता,
शाम होती नित्य सबेरा,
इस जहाँ में चार दिन का ही बसेरा।

आदमी होता अमर नहीं, नाम होता है अमर
होते सफल वो ही यहाँ, जो कर्म की चलते डगर।
कर्म जीवन ज्योति है बिन कर्म सब कुछ है अंधेरा ।।

कर्म ही तो इस जहाँ का सबसे बड़ा धर्म है
जो समझ गया यह धर्म, ये जीवन हुआ उसका सुनहरा ।।

ऐसा नहीं दुनियाँ में कुछ, जहाँ कर्म की ना हो पहुँच
कर्म की महिमा अनंत है, कर्म ही सबसे बड़ा सच है
जो कुछ यहाँ तुम देखते हो, कर्म ही तो है बिखरा ।।

कर्म से ही राम बन गये, कर्म से ही रावण बना
कर्म से ही गाँधी हुये, कर्म से ही नाथू जना
आओ हम भी कुछ कर्म कर लें, कर्म का ही है निहोरा ।।

प्रीत की बहार

हमारे बीच की यह युगों की दूरी........
किसी दरी की तरह सिमटकर रह जाए.......
खामोश प्रेम की अधखिली कली...........
कुहरा भरी सहर के कानों में कुछ कह जाए........
कच्चे धागे में पिरोऐ मोती.........
धरती पर जाये बिखर-बिखर..........
शांत गंभीर समुंद्र में ऊंची उठे..........
चुलबुली लहर-लहर.......

किनारे भीगे - तृप्त हो मन........
सदा उठे देह महल........
प्यासे होठों पर फिसलती रहे.....
तरल मन भावन.....गजल
मै तैयार...... तुम सोचो....प्रिय.....
धरती आकाश...... मिल जाये.......
तपते इस रेगिस्तान में.......
प्रीत की बहार........खिल जाये
प्रीत की बहार खिल जाये.......।

श्री. एन दळवी
लेखापरीक्षक

मेरी प्यारी बिल्ली

माँ प्रकृति की प्रेम भरी बौछारें

लावण्या सुपुत्री
श्रीमती गार्गी करमाकर

वार्षिक समारोह की कहानी एंकर की जुबानी

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंन्द्रीय), मुंबई में पिछला वार्षिक समारोह वर्ष 2019 में आयोजित हुआ था। तब वह बड़ा हिट साबित हुआ था और कर्मचारियों के दिल पर एक छाप छोड़ गया था। सभी प्रतिभागियों की खूब प्रशंसा हुई थी और एंकरो ने भी दर्शकों का खूब मनोरंजन किया था। ज्ञात हो कि तब हमने बकायदा एक प्रोफेशनल एंकर को हायर किया था और मंच पर उनका साथ निभाया था, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी श्रीमती नीता भंगाले ने। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण बिंदु था बतौर मुख्य अतिथि हिंदी फिल्मों की मशहूर अदाकारा काजोल का आना।

फिर आया साल 2020, नाम तो 20-20 था मगर यह साल गुजरा एक नीरस और बदरंग टेस्ट मैच की तरह से। कोरोना नामक महामारी लिए चली आई अपने साथ 2020 की बसंती हवा। मार्च 2020 से संपूर्ण देश में लॉकडाउन लग चुका था और रुकते-ठहरते यह सिलिसिला वर्ष 2021 तक जारी रहा। लोग कोस रहे थे इस बीमारी को और गो कोरोना के नारे बुलंद कर रहे थे। माहौल ऐसा था कि किसी कार्यक्रम के आयोजन की तो बात ही रहने दीजिए, लोग कार्यालय आने से भी डरते और हिचकते थे। खैर 2021 की छमाही के बाद देश से प्रतिबंध हटने लगे थे। जैसे-तैसे ही सही लोगों का डर भी धीरे-धीरे खत्म होने लगा था और जिंदगी वापस पटरी पर आने लगी थी। परिस्थितियाँ सामान्य होने लग गयी थीं, तब जाकर कार्यालय के उच्चाधिकारियों ने तय किया कि हम वर्ष 2022 में वार्षिक समारोह का आयोजन करेंगें। हालाँकि, तब तक किसी हॉल/ ऑडिटोरियम में आयोजन की प्रशासनिक अनुमति न होने के कारण कार्यालय-प्रांगण में ही आयोजन होना तय हुआ था। परंतु किसी कारणवश समारोह की तिथि तय नहीं हो पा रही थी। कभी मार्च, कभी अप्रैल, फिर मई में सोचा गया कि अब आयोजित करते हैं, लेकिन सर्वसम्मति से अंतिम मुहर लगी 9 जून की तारीख पर। इस देरी का फायदा हमें यह मिला कि तब तक प्रशासन की तरफ से भी पब्लिक हॉल में किसी भी तरह के सार्वजनिक आयोजन की छूट की घोषणा हो चुकी थी।

यह खबर सुनकर जैसे सबकी बांछें खिल गयी थीं और तब महानिदेशक महोदय से भी अनुमति मिल गयी, कार्यालय से बाहर कार्यक्रम के आयोजन करने की। उत्साह दुगुना हो गया था, ऑडिटोरियम की तलाश शुरु हुई और यह तलाश खत्म हुई फिर से दादर के उसी स्वातंत्र्यवीर सावरकर ऑडिटोरियम पर जाकर, जहाँ हमने पिछला वार्षिकोत्सव मनाया था। दोबारा से ज़बरदस्त कार्यक्रम होने वाला था। सबके मन में यही भावना हिलोरें मार रही थी कि चाहे 2020 और 2021 ने जितने भी सितम किये हों हम पर लेकिन फिर से 2019 वाला उल्लास और आनंद मनाएंगें।

हॉल बुक हो गया था, तारीख तय थी, कार्यक्रम की तैयारियों होने लग गयी थीं। किंतु बात फँस रही थी एंकरों को लेकर।अधिकारीगण इस बात से चिंतित थे कि हम बाहर से एंकर क्यों ही हायर करे, वो भी भारी कीमत चुकाकर? कलाकार तो हमारें अपने हैं, फिर एंकर भी अपने ही होने चाहिए। 2019 से अबतक बहुत कुछ बदल गया था (महानिदेशक

सभी समूह अधिकारी तक भी), तो जाहिर है कि सोच और कार्यशैली भी बदलेगी ही। सभी ने एक बड़ा जोखिम उठाया कार्यालय के ही किसी कर्मचारी से एंकरिंग करवाने का। जोखिम इसलिए कि किसी भी कार्यक्रम को सही दिशा देना और दर्शक को बांधे रखना- ये दोनों की ज़िम्मेदारी एंकर की ही होती है और यदि एंकर अनाडी निकला तो कार्यक्रम का चौपट होना तय है। खैर अब एंकरो की तलाश शुरु हुई। एक दिन अचानक से अरविंद बारा सर (उपाध्यक्ष/एल. एंड आर, क्लब) ने मुझे और मेरे सहकर्मी श्री रंजय कुमार सिंह को अपने कक्ष में बुलाया। अंदर गया तो क्लब की सचिव नंदिता मैडम भी पहले से बैठी हुई थीं। बारा सर ने हम दोनों को यह बोलते हुए एकदम से चौंका दिया कि आप दोनों को एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपने के लिए बुलाया गया है और बहुत भरोसा है कि आप दोनों उसे अच्छे से अवश्य निभाएंगे। मैं और रंजय सर भौचक्के होकर एक-दूसरे को निहारने लग गए। तब बारा सर ने कहा, अरे डरो मत। तुम दोनों को वार्षिक महोत्सव की एंकरिंग का जिम्मा सौपनें जा रहे हैं हम, क्योंकि तुम दोनों ही पहले भी छोटे-मोटे कार्यक्रमों जैसे कि स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, हिंदी पखवाड़ा, सेवानिवृति, इत्यादि कार्यक्रमों में मंच-संचालन करते आये हो। सर की बात तो सही थी, किंतु अन्य कार्यक्रमो की बात और थी क्योंकि वह अपने कार्यालय तक ही सीमित रहता था, किंतु वार्षिक महोत्सव मतलब वास्तव मे यें एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी, क्योंकि इसमें बाहर से भी लोग आमंत्रित होंगे और देखने आएंगे। उपर सें इस बार हमारा वार्षिकोत्सव यूटयूब पर लाइव जाने वाला था। खैर हम दोनों ने यह जिम्मा ले लिया और केबिन से बाहर आ गए। सेक्शन में वापस आकर अपनी-अपनी कुर्सियों में बैठे और एक-दूसरे को पानी पिलाया। (यहाँ आप हँस सकते है)। थोडी देर की चुप्पी के बाद रंजय सर ने बोला - "सौरभ! हमें जी-जान लगा देनी है इस कार्यक्रम को सफल बनाने में।" मैने भी जोश मे हांमी भरी। हम दोनों को इंतजार था कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के नाम का पता चलने का और क्या-क्या परफॉरमेंस होंगे उनका, ताकि हम कार्यक्रम की रुपरेखा और अपने संवाद की तैयारी कर सकें।

उधर सभी प्रतिभागी अपनी-अपनी तैयारी में जोर-शोर से लगे थे और इधर दोनों एंकर को शेडयूल हीनही मिल पा रहा था। वक्त बीतता जा रहा था। 7 जून को जाकर अंतिम ऑडिशन हुआ और 8 जून की शाम 6 बजे दोनो एंकर को प्रोग्राम का अंतिम शेडयूल और मुख्य अतिथि का नाम बताया गया। हम दोनों नें फिर एक-दूसरे को निहारा, जैसे इशारों में ही पूछ रहे हों, क्या हम कर पायेंगे इतने कम समय में? (यहाँ भी आप हँस सकते हैं अगर हमारी लाचारी पर तरस न आए तो) मैने बोला - "रंजय सर! हम दोनो भाई मिलकर कल महफिल जमा देंगे भरोसा रखिए।" एंकरिंग के दौरान बड़े भाई और छोटे भाई का कॉन्सेप्ट उसी समय मेरे खुराफाती दिमाग में आ गया था और मैंने तत्क्षण ही कह दिया था कि सर कुछ नया नहीं करना है, हम दोनों जैसे सेक्शन में भी एक-दूसरे की खिंचाई करते रहते हैं बस वैसा ही उधर मंच पर भी करना है और आगे जो आएगा उसे एक्सटेम्पो की तरह से करते जाएंगे। इतना कहकर दोनों ने कार्यालय से शाम के 6:30 बजे विदा लिया। घर आकर मैं अपने संवाद लिखने में जुट गया, शायरियाँ लिखीं, चुटकुले जुगाड़े, न जाने क्या-क्या किया। मेरी दीवार घड़ी ने रात के 1 बजा दिये थे लेकिन अभी तो मेरे संवाद आधे भी पूरे नहीं हुए थे। एक चिंता अलग सता रही थी कि रात में सोया नहीं तो कल मंच पर नींद आएगी, नींद की कमी से आँखे और चेहरा सूज जाएगा तो मैं सुंदर नही दिखूंगा (यहाँ आप मेरे मना करने पर भी अवश्य हँसेंगे, पता है मुझे)। अरे भाई, एंकर को सुंदर दिखना ही होता है, इसमें कौन-सी नयी बात कर दी मैने? खैर तमाम चिंतन-मनन के उपरांत यह तय हुआ कि अब मुझे सो जाना चाहिए। अतः मै 1:15 बजे सो गया। अगले दिन रोज़ की तरह पहले घर में पूजा की, फिर ऑफिस जाकर भगवान श्री सत्यनारायण की पूजा-अर्चना की और प्रसाद ग्रहण कर के निकल पड़ा ऑडिटोरियम के लिए। अब दो घंटे के भीतर दो बार भगवान की पूजा करके आश्वस्त था कि भगवान लाज रख लेंगें मेरी। ऑडिटोरियम पहुँचकर खाना खाया और रंजय सर को खींच कर ग्रीन रुम में ले गया कि चलिए कपड़े बदलिए और तैयार हो जाइए। दोनों भाई बिना मेकअप के ही चकाचक तैयार हो गए और धमाल मचाने को आतुर थे।

उद्घाटन करवाने का जिम्मा व.ले.प.अ. श्री ऑल्विन फुर्टाडो की थी, जिसके बाद वो मंच-संचालन हम दोनों भाईयों को सौंपने वाले थे।

उद्घाटन हो चुका था और मुख्य अतिथि के साथ-साथ कार्यालय के समस्त उच्चाधिकारी भी मंच से उतकर अपनी-अपनी कुर्सियों में बैठ गये थे। फुर्टाडो सर ने हम दोनों को मंच पर आने का हुक्म जारी किया और हम दोनों बैकस्टेज से मंच की ओर बढ़ने लगे। लेकिन जैसा कि दोनों भाईयो के बीच पहले से ही तय था कि पोडियम पर पहले बड़ा भाई जाएगा, वैसा ही हुआ भी, रंजय सर गये और खुद को दर्शकों से परिचय करवाया साथ ही मुझे कोसा कि मेरा एक साथी भी मंच पर आने वाला था लेकिन ये लड़का कभी भी समय पर नहीं आता है, इसलिए उसका परिचय भी नहीं करवाउंगा। मैं बैक स्टेज से सब सुन रहा था और उनकी कलाकारी का कायल हुआ जा रहा था। फिर मैं दर्शकों के सामने आया और उनसे शिकायत लगायी कि देखिए मेरे बड़े भाई कैसे है, मेरा परिचय भी नहीं करवा सकते है! दर्शकों में से शिवा सर की तेज़ आवाज़ आई - "बड़ा भाई ऐसा ही होता है।" कदाचित शिवा सर भी अपने घर में बड़े ही होंगे। रंजय सर ने मुझे बोला, तू अपना परिचय खुद दे दे जल्दी से वरना मैं पहली प्रतिभागी को मंच पर बुला लूंगा। मैनें भी बिना देर किए एक शेर चिपका ही दिया, "माँ की परछाई, पिता का गौरव हूं मै, नमस्कार देविओं और सज्जनों, कुमार सौरभ हूँ मैं।" दर्शकों ने खूब वाहवाही की और तालियों - सीटियों से मुझे नवाजा।

फिर शुरुआत हुई रंगारंग कार्यक्रम की। प्रतिभागी आईं, कुमारी अनश्वरा, सुपुत्री श्रीमती रेमा अनिल कुमार ब.ले.प.अ. जिन्होने दुर्गा-स्तुति पर सेमी क्लासिकल नृत्य पेश किया। दर्शकों नें खूब सराहा। दूसरी प्रतिभागी आई सुश्री पूजा कुमारी, जिन्होंने अपनी सुरीली आवाज़ में "मेरे ढोलना सुन" सुनाया। दर्शकों ने खूब आनंद लिया उनकी सुर-लहरियों का और खूब तालियाँ पीटीं। उसके बाद मंच पर आई कुमारी मीनल और कुमारी दीक्षा (श्री अशोक कुमार पिंटू की बेटी और भतीजी) जिन्होंनें "एक दिल है एक जान है" गीत पर शानदार नृत्य पेश किया। फिर बारी आई महानिदेशक के निजी सचिव श्री मुरलीकृष्णन के मलयाली गीत की। येसुदास जी के गीत को बढ़िया निभाया मुरली सर ने। इसके बाद बारी आई कार्यालय की हरफनमौला स.ले.प.अ. श्रीमती बिन मेनन की, जिन्होंने अपनी मीठी आवाज में दर्शकों पर जादू बिखेरा। परफारमेन्स के बीच में हम दोनों भाईयों के बीच खींच-तान भी चालू ही थी, जिसका अलग लुल्फ दर्शक उठा रहे थे। कभी बड़े भाई भारी पड़ रहे थे कभी मैं। दोनों ने दर्शकों को चुटकुले सुनाए और खूब हंसाया। मैंने तो खड़े-खड़े गाय और बिल्ली को आपस में बहन साबित कर दिया, जिसे सुनकर दर्शक पेट पकड़कर हँसने लगे। खैर बात करें अगली प्रस्तुति की तो मंच पर "ये जीवन है" गीत लेकर आई श्रीमती सुरेखा मेंडन। दर्शकों ने तालियाँ बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया। अगली बारी थी दर्शकों की सांसे थाम देने वाली परफॉमेंस की। जी हां, मंच पर हूला हूप लेकर सामने खड़ी थीं कुमारी प्रियम सुपुत्री सुश्री पूर्णिमा सुकुमारन, व.ले.प.अ. जिन्होंने ब्रेथलेस सांग पर ज़बरदस्त नृत्य पेश किया और दर्शकों को मुग्ध कर दिया। इसके बाद आए श्री विनोद कांबळे और गीत पेश किया "हमने तुमको देखा ऐसे", उन्होने इस अंदाज मे दर्शकों की तरफ देखा कि वे तालियाँ बजाए बिना रह न सके। अब बारी आई एक ग्रुप डान्स की, जिसके माध्यम से सभी कलाकारों ने दिवंगत लता दीदी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कलाकारों के नाम थे - बिन मेनन, श्वेता सवने, पूजा कुमारी, खुशबू प्रकाश, सुमन भारती, पूजा नागल, बिना राय, निकिता वर्मा सोनल मनोज सौजे और पल्लवी। भाव-विहवल दर्शकों ने वन्स मोर चिल्लाया और तालियों से हॉल गूंजा दिया। इसके बाद बारी आई एक स्पेशल परफॉमेंस की। जी हाँ आ. प्रा. ले. पं. के निदेशक श्री विवेक संभारिया ने "मैं कोई ऐसा गीत गाऊं" गाकर सुनाया। यकीन मानिए यह ओरिजनल गीत के आस-पास की गायिकी थी। दर्शकों के साथ-साथ हम एंकर ने भी जिद् पाल ली कि आपका सॉंग तो वन्स मोर लेंगे ही।

सर ने भी हम सब की बात रखी और यूँ आया कार्यक्रम का पहला वन्स मोर परफॉरमेंस । उधर परफॉरमेंस के बीच मेरी और बड़े भाई की तू-तू मैं-मै लगातार जारी ही थी, दर्शक भी मजे लिंए जा रहे थे। चलो जी अब बारी थी थोडा फॉस्ट नंबर की। मंच पर आगमन हुआ सुश्री रिया मेनन सुपुत्री बिन मेनन का, जिन्होंने एक मेडली गीत पर ज़बरदस्त ऊर्जायुक्त नृत्य प्रस्तृत किया और तालियाँ बटोरी। रिया के बाद आये श्री नामदेव दळवी एक गीत लेकर - "आने से उसके आए बहार"। मैनें उनसे आग्रह किया कि बहार को लाकर यहीं रहने दीजिए, उसे वापस जाने मत दीजिएगा। दळवी जी ने बिल्कुल वैसा ही किया भी और बहार ला दिया ऑडिटोरियम मे। अब फिर से बारी आई एक और ग्रुप डान्स की जो कि एक बॉलीवुड मिक्स डॉन्स था। कलाकार इस प्रकार थे - श्वेता-श्रीष, निकिता-आशीष पल्लवी-ऋषभ, पूजा-सागर, बीना-पंकज और पूजा नागल-दिपक/हिमांशु। यह ग्रुप डान्स भी मनमोहक रहा और वाहवाही लूटी। इसके बाद एक बार फिर से मंच पर आई मिस प्रियम, लेकिन इस बार एक तराना लेकर कैसी पहेली जिंदगानी और दोबारा से प्रशंसा पाकर गयीं। बारी एक बार फिर से ग्रुप डान्स की थी जो कि एक कोली नृत्य था। कलाकारों के नाम इस प्रकार थे - श्रीमती लता नायर, संजय पालये, किरण काळेबाग, वेद प्रकाश और लीड कर रहे थे स्वयं कोरियोग्राफर श्री प्रमोद जंगम। इस नृत्य के दौरान इसकी एक-एक बीट पर दर्शक भी अपनी-अपनी जगह पर थिरक रहे थे। जबरदस्त प्रशंसा मिली इस प्रस्तुति को और दर्शकों की माँग पर सामने आया दूसरा वन्स मोर परफोरमेंस। उसके बाद बारी आई एक और धाकड़ प्रतिभागी की, श्री जितेन्द्र काळे की, जिन्होंने बिग बी की आवाज़ और उन्ही के अंदाज में स्टेज ऑन फायर कर दिया। दर्शकों मे से लोग मंच पर आकर नाचने लग गए, महानिदेशक महोदय को भी मंच पर आने को मजबूर कर दिया काळे जी ने और फिर महानिदेशक महोदय ने भी नहले का जवाब दहले से दिया और अपने ही अंदाज में एक गीत सुनाया। अब दोबारा से बारी थी श्रीमती बिन मेनन की, जिन्होंने "घर मोरे परदेसिया" गीत पर एक सुंदर नृत्य पेश किया और तालियाँ पायीं। इसके बाद मंच पर आयीं सुश्री निकिता वर्मा, जिन्होंने भी एक मेडली गीत पर ही शानदार नृत्य का प्रदर्शन किया और दर्शको से तालियाँ बटोरी।

अब बारी थी मेरी, यानि एकरिंग करते-करते सिंगिग की तरफ जाने की। "क्यूँ आजकल नींद कम ख्वाब ज्यादा है" गीत गाकर मैंनेअपने प्रिय गायक स्वर्गीय के. के. को श्रद्धांजलि अर्पित की। गायकी ठीक-ठीक रही मेरी, थोड़ी तालियाँ भी बज ही गयी थीं। वैसे भी ठीक-ठाक ही होनी थी, सुबह से गला जो फाड़ रहा था एकरिंग में, तो गायिकी क्या ही बढ़िया होती। भई अब बारी थी एक नादखुळा पेशकश की। मराठी शब्द नादखुळा का अर्थ होता है नटखट। मंच पर आगमन हुआ मिस श्वेता सवने का, जो एक मराठी लोक-नृत्य लावणी पेश करने वाली थीं। अब मुंबई मे ज्यादातर मराठी दर्शकों के सामने लावणी चल रही हो और दर्शक नाचे बिना रह जाएं ऐसा हो ही नहीं सका, सो दर्शक फिर से अपनी-अपनी जगहों पर नाचने लग गए। प्रस्तुति खत्म होते ही हॉल सीटियों और तालियों से गूंज उठा और वन्स मोर वन्स मोर के नारे बुलंद होने लगे। श्वेता ने भी दर्शकों को निराश नहीं किया और उसी एनर्जी से दोबारा नाचीं। उनका साथ देने मंच पर श्री राकेश भोईर और पूजा कुमारी भी आ गये थे। तो इस प्रकार से सामने आयी तीसरी वन्स मोर प्रस्तुति। इसके बाद रजत लेकर आए पंकज उधास की ग़ज़ल "चांदी जैसा रंग है तेरा और तालियाँ बटोरीं। अब मंच पर आये किरण काळेबाग जी। साथ में लाए एक एवरग्रीन हिट गीत " मैं हूँ डॉन।" उन्होंने जो थिरक-थिरक के गाया है, मत पूछिए। दर्शक फिर से मंच पर आकर नाचने लग गए।

इसके उपरांत वार्षिक महोत्सव खेलकूद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र बाँटे गये तथा अंतिम प्रस्तुति के लिए मंच पर आयी फौजियों की टोली। कलाकारों के नाम थे - रजत, ऋषभ, हिमांशु, श्रीष, सागर, अमित, आशीष, पंकज और दीपक। उनके जोश भरे परर्फोमेंस को देखकर दर्शक भी भारत माता की जय के नारे लगाने लगे और जयघोष करने लगे। इसी प्रस्तुति के एक हिस्से के रुप में "मेरा कर्मा तू मेरा धर्मा तू" ग्रुप साँग लेकर आयीं

श्रीमती रचना जयपाल सिंह, जिनका साथ दिया जितेन्द्र काळे, कुमार सौरभ, पूजा कुमारी और नंदिता शिवशरण ने । आखिर में निदेशक/प्रशासन ने धन्यवाद ज्ञापित किया और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी कलाकारों का आभार व्यक्त किया तथा राष्ट्र-गान के उपरांत कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बैक स्टेज में सब कलाकार गले मिल रहे थे और हॅन्डशेक हो रहे थे। उत्साह का माहौल था। मैंने मेरे बड़े भाई रंजय सर से हाथ मिलाया और बोला - "येस वी डीड ईट सर।" कार्यक्रम की समाप्ति तक जैसे हम सब सेलेब्रिटी बन गये थे। सब लोग हाथ मिलाने और बधाईयां देने पास आ रहे थे। जब मैं ऑडिटोरियम के गेट से बाहर निकलने लगा तो एक झुर्रियों वाली कंपकंपाते हाथ ने मेरी बाहें थाम ली, मैने पीछे मुड़कर देखा तो वो एक 80 वर्ष के आसपास के बुजुर्ग थे। वो मुझसे मराठी में ही बोलने लगे कि मैं इस ऑडिटोरियम का पिछले 35 सालों से डोरकीपर हूँ। बहुत से कार्यक्रम देखे, लेकिन आप-सा एंकर नहीं देखा। उनके प्रशंसा के शब्द मेरे दिल में गहरे उतर गये और आँखों से आंसू स्वतः फूट पडे। मैंने झट से उनके पांव छू लिए। यकीन मानिए, मुझे इतनी बड़ी प्रशंसा पहले कभी नहीं मिली थी। मेरे लिए यह बहुत विशेष स्थान रखता है। हाँ, मुझसे एक भूल अवश्य हो गयी कि मैं जल्दबाजी में उनके साथ एक सेल्फी नहीं निकाल पाया, अन्यथा अवश्य साझा करता आप सब के साथ। मेरे निकलते-निकलते, उन्होंने मुझसे फिर कहा- "फिर आइएगा, मैं आपको सुनुंगा"। घर पहुँचने के बाद भी लोगों के कॉल्स और व्हाटसअप पर बधाई और प्रशंसा भरे संदेश आ ही रहे थे। अगले दिन ऑफिस जाने के बाद भी लोग आ-आकर मिल रहे थे और बधाइयाँ दे रहे थे, कोई चॉकलेट लेकर आ रहा था, कोई गले मिल रहा था... बस बयाँ नहीं कर सकता, कैसा लग रहा था उस समय। मैं तो जैसे सातवें आसमान पर था। और इन सब खुशनुमा अनुभूतियों के पीछे मेरे ऑफिस का हाथ है। शुक्रिया डी.जी.ए. (सी) मुंबई... तुम्हारा कोटि-कोटि आभार।

....हमारे कार्यालय के वार्षिक कार्यक्रम को आप यूटयूब पर देख सकते हैं।

श्री. कुमार सौरभ
डी. ई. ओ.

https://youtu.be/Av-TUf-fAVM

वार्षिक समारोह की झलकियाँ

वार्षिक समारोह की झलकियाँ

वार्षिक समारोह की झलकियाँ

पृथ्वी ग्रह का एलियन

समय आधुनिकता और तकनीकी के पंख लगाकर उड़ रहा है। आज 2022 है, फिर 2025 भी आएगा, उसके बाद धीरे-धीरे तकनीकी मानव जीवन पर हावी होने लगेगी । हम 2080 आते-आते इन तकनीकियों के पूरी तरह से अधीन होजाएँगे।

देखा जाए तो 450 वर्ष पूर्व हम अंग्रेजो के गुलाम हुए थे, ऐसा हमारे पूर्वज और भारतीय इतिहास बताता है। लेकिन हिम्मत, एकता, संगठन और सूझबूझ के साथ हमने अपनी आजादी को प्राप्त भी कर लिया। और हमारे हृदयों में मनुष्यों के प्रति और देश के प्रति प्रेम की भावना थी।

चलिए हम सोच कर चलते हैं कि जो मानव 2080 में रहेंगे वो कैसे रहेंगे ? हम अपने आप को उस जगह पर रख कर देखते हैं। 2080 के मानव पूरी तरह से तकनीक के दास होंगें। सोचो सुबह से रात तक, जन्म से मृत्यु तक, केवल हमें तकनीक नियंत्रण करती रहेगी । हमारा जीवन तकनीक के अधीन है।

एक व्यक्ति जब सुबह उठता है, बिस्तर पर पास ही कई तरह के रिमोट, कंट्रोल पैनल्स और रोबोट हैं। सिग्नल मिलते ही रोबोट आपके दैनिक कार्यों के लिए उपस्थित हो जाता है।

धरती पर पानी पूरी तरह से समाप्त हो चुका होगा। खेत-खलिहान बहुत दूर की बातें हो चुकी होंगी। घर अब लैब बन गया है। आज से 20 वर्ष पहले तो घरों में कपडे भी धोए जाते थे, नहाया भी जाता था। लेकिन जब पानी ही समाप्त हो गया है तो इन सब चीजों का प्रश्न ही ही नहीं उठता। अब कपड़े वाशप्रूफ हैं। आपने उनकों जोरों से झटका और सैनीटाइज करके वापस से पहन लिया।

पानी मानव शरीर के लिए अति आवश्यक है। मनुष्य के शरीर में 70% पानी ही है। इसकी पूर्ति के लिए अब हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के 2:1 के अनुपात में बनाए गए वॉटर मॉलिक्यूल बबल्स हैं। जिन्हे आप प्यास लगने पर लेते है और आपकी पानी की पूर्ति होजाती है।

भूख लगने पर अनाज नहीं है। तो इसके लिए भी वैज्ञानिकों ने ऐसी कैप्सूल्स का आविष्कार कर लिया है कि आपको जब भूख लगे इसे ले लीजिए, आपकी भूख मिट जाएगी।

तकनीक के साथ पढ़-लिखकर तकनीकी मनुष्य बन गया है। वर्ष 2080 में अब व्यक्ति का घर लैब होता है। जिंदगी उनकी लैब होती है। यह भविष्य होगा 2080 में पृथ्वी का । तब तक शायद मंगल ग्रह में भी जीवन विकसित हो जाएगा। वहाँ पर भी सभ्यता विकसित हो जाएगी। और तब यहाँ से पृथ्वी का मनुष्य यदि मंगल पर जाता है, तो शायद पृथ्वी ग्रह का एलियन कहलाएगा।

जैसा कि हम कल्पना करते हैं, दूसरें ग्रहों में एलियन होते हैं। जब मनुष्य में मनुष्यता समाप्त हो जाती है तब शायद वह एलियन बन जाते हैं जो पूरी तरह से तकनीकी मानव होते हैं।

रंजय कुमार सिंह
डी.ई.ओ

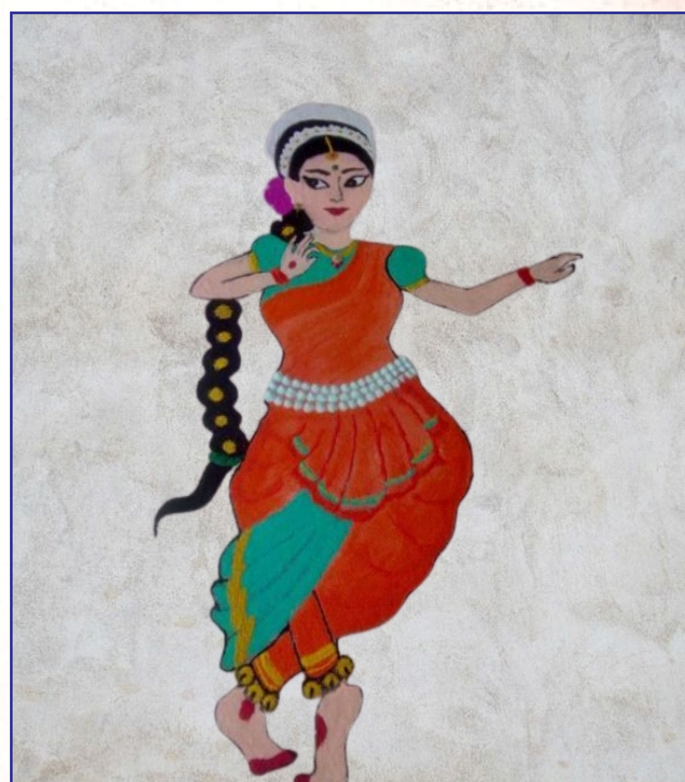

अश्विनी संतोष सुल्पुले

कु. श्रेया सवने बहन
सुश्री श्वेता सवने / एम. टी. एस

भारत भू का गुणगान

आओ भारत भू का गुणगान करें
पाला पोसा है जिसने,
उस धरा का गुणगान करें। आओ भारत का गुणगान करें।
कण-कण में शंकर हैं जिसके,
जहाँ कल कल गंगा बहती है।
चहुँ दिशाएें धाम हैं जिसके,
माँ सीता घर-घर रहती हैं।
युग-युग में हुए राम, कृष्ण
उस देव धाम का सम्मान करें। आओं भारत का गुणगान करें।
है वसुंधरा उस वीर शिवा की,
राणा और गोविंद प्यारे की,
ले तलवार बिछा दी लाशें,
उन पापी हत्यारों की।
निज धर्म न त्यागा हो जिसने,
उन वीरों का ध्यान करें। आओं भारत का गुणगान करें।
मुरझा जाए चमन न उनका
जिसे खून से अपने सींचा
हो गए थे टुकड़े इसके
जब गद्दारों ने इसे था खींचा
अब सब अर्पित चरणों में माँ,
रणभूमि में चल हुँकार भरें। आओ भारत का गुणगान करें।

रंजय कुमार सिंह
डी.ई.ओ.

मातृभूमि

नमन करता हूं उस धरा का,
जिसपर मैंने जन्म लिया।
धूल से धूसरित करके जिसने,
तन को मेरा हष्ट-पुष्ट किया।।

धूल भी है जिसके कितने रंग का,
कहीं लाल और कहीं काली है।
हर किसी की अपनी महत्ता,
पर लगती सबको प्यारी है।।

मां सीता की जननी जो है,
और तप ज्ञान की भूमि है।
गिरिराज है रक्षक जिसके,
और हिंद पांव को धोती है।।

हरा भरा तन है जिसका,
और निर्मल गंगा बहती है।
हृदय भरा है धन धान से,
और सब की क्षुधा मिटाती है।।

वीरों की है वीर भूमि,
धूल रक्त से रंजित है।
ऋणी हूं मैं इस धरा की,
जिसकी महिमा मंडित है।।

रजनीश वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्कूटर से मेरी नेपाल यात्रा

नेपाल एक अत्यंत सुंदर छोटा सा पडोसी देश है जहाँ घूमने के लिये दुनियाभर से पर्यटक आते हैं, भारत से भी बहुत सारे लोग आते हैं। मेरे मन में विचार आया कि हम भी घूमने नेपाल जाएं मगर कैसे जाए, तब मेरी पत्नी ने पूछा कि हम अपनी स्कूटर से जा सकते हैं क्या ?

मैने जानकारी हासिल की तो पता चला कि भारतीय बाइक नेपाल जा सकती है। फिर मेरा बाय-रोड सफर का विचार तय हो गया कि जायेंगे तो अपनी स्कूटर से ही जायेंगे। सब तैयारी हो गयी पत्नी का हौंसला देखकर मेरे मन की तैयारी भी हो गई। 2000 किलोमीटर का सफर पोखरा तक था जिसे स्कूटर से तय करना था।

आखिर वो दिन आया 12 मार्च 2022 को हमें सफर के लिए निकलना था। 11 मार्च 2022 को सभी पैकिंग कर के तैयार थे। 12 मार्च को सुबह 8 बजे हमने सफर शुरु किया। पहले दिन इंदौर 590 किलोमीटर का सफर था, लेकिन घर से देर से निकलने के कारण 590 किलोमीटर का सफर मुश्किल था। हमने यह तय किया था कि शाम को 7 बजे के बाद गाड़ी नहीं चलाएंगे। लंबा सफर करना है तो आराम भी जरुरी है।

पहले दिन हम शिरपुर (महाराष्ट्र) में होटल में ठहरे। पहले दिन 400 किलोमीटर का सफर पूरा किया था। दूसरे दिन सुबह 6 बजे आगे के रास्ते निकल गए रास्ते में धूप तो बढ़ रही थी, लेकिन रास्ते मे दोनो तरफ के खेतों से हल्की सी ठंडी हवाओं से सफर में गर्मी का अहसास नहीं हो रहा था, हमारी मंजिल तो अभी बहुत दूर थी, तो दिनभर गाड़ी चलानी ही थी । आखिर दिनभर गाड़ी चलाने के बाद 500 किलोमीटर दूरी पार करके, रात 7 बजे गुना (मध्यप्रदेश) पहुंचे। तीसरे दिन सुबह गुना से 6 बजे निकले। रास्ते में झांसी से आगे चलते-चलते चारों तरफ गेहूँ की खेती देखते-देखते शाम 8 बजे कानपुर (उत्तरप्रदेश) पहुँचे, पता ही नही चला। चौथे दिन शाम 8 बजे गोरखपुर पहुँचने के बाद हमारे मन में खुशी की लहर दौड़ रही थी। अगले दिन हमारा नेपाल जाने का सपना पूरा होने वाला था, क्योंकि नेपाल का लंबा सफर वह भी स्कूटर पर डबल सीट करना मुश्किल है, ये बाते इंटरनेट पर और दोस्तों से हमेशा सुनते आ रहे थे, लेकिन हम दोनों ने यह चुनौती स्वीकार की थी।

पांचवे दिन गोरखपुर से निकलने के बाद 100 किलोमीटर दूरी पार करने के बाद नेपाल की सोनौली सीमा पर पहुंचे। वहा गाड़ी का भंसार (परमिट) निकलवाने के बाद भारतीय रुपये की नेपाली रुपये में बदली की तो बहुत खुशी हो रही थी क्योंकि भारतीय 100 रुपय के बदले नेपाल के 160 रुपय मिल रहे थे। नेपाल की सीमा में जाने के बाद वहां के लोगों बताये कि हम चितवन जाने वाले हैं तो वह बोले की नेपाल सारा पहाड़ों का देश है, यहाँ आपकी स्कूटर वो भी डबल सीट कैसे जाएगी ? तो जब हमने उन्हें बताया कि मैं और मेरी पत्नी दोनों इसी स्कूटर से लेह लद्दाख का सफर कर चुके हैं तो उन्हे विश्वास नहीं हो रहा था कि स्कूटर, लद्दाख जैसे दुनिया के सबसे ऊंचा रोड खारदुंगला टॉप पर जा सकती है।

मेरा मानना है कि गाड़ी तो ठीक होनी चाहिए लेकिन दूर के सफर के लिए अपने मन की शक्ति, इच्छा, और हिम्मत भी होनी जरुरी है। फिर कोई भी समस्या आए तो उसका सामना करने के लिए अपना मन तैयार हो जाता है।

नेपाल में सफर शुरु करने के बाद हमारी अग्नि परीक्षा शुरु हो गई, क्योंकि सोनौली से आगे का 190 किलोमीटर का रास्ता पूरा ऑफ रोड था। पहाड़ो को काटके रास्ते बनाये गए हैं। नेपाल सुंदर पहाड़ो का देश है, रास्ते में लैडस्लाइड होने के कारण गाड़ी चलाना बहुत मुश्किल काम था। लेकिन हिम्मत करके पहाड़ों में से आगे बढ़ते हुए, 7 घंटे के बाद नेपाल के पोखरा शहर में पहुंच गए और पांच दिन की थकान दूर हो गई। रास्ते में खूबसूरत पहाड़ी रास्ते वहा की सुंदर वादियों में बसे हुए नजारे हर मोड़ पर नया नजारा देखते, तस्वीरें निकालने का मोह न हो ऐसा हो ही नहीं सकता।

पोखरा से 180 किलोमीटर दूर स्थित मुक्तिनाथ मंदिर के दर्शन करने जाते समय दुनिया के सबसे खतरनाक रास्ते क्या होते हैं, यह भी अनुभव कर लिया। वहाँ का गडकी गोल्डन ब्रिज दुनिया के सबसे लंबे

सस्पेंशन ब्रिज देखने का मौका मिला। मुक्तिनाथ मंदिर के पास तापमान 2 डिग्री सेल्सियस तक था । यहा की बर्फीली पहाड़ों की सुंदरता कैमरे में कैद कर दी । फिर मुक्तिनाथ दर्शन के बाद फिर से पोखरा पहुँचे।

पोखरा में गुप्तेश्वर महादेव गुफा, फेवा झील, डेविस फॉल आदि देखने के बाद हम दूसरे दिन काठमांडू, जो नेपाल की राजधानी है, वहाँ के लिए निकले। रास्ता तो खराब था। नेपाल की खूबसूरत वादियाँ देखते ही मन और तन दोनों आगे के सफर के लिए तैयार थे। नेपाल में सबसे बड़ी मनोकामना केबल-कार का सफर तो जिंदगी भर याद रहेगा जिसकी लंबाई लगभग 3 किलोमीटर लंबी है।

शाम 7 बजे हम काठमांडू पहुंचे। फिर दूसरे दिन लोकल साइट-सीन देखने के बाद शाम को पशुपतिनाथ मंदिर दर्शन किया। वहा का नजारा देखने लायक था । खूबसूरत मंदिर के पास कुछ पल बिताने के बाद हम रात को आराम करके सुबह चितवन के लिए निकल पड़े। चितवन नेपाल का सुंदर अभयारण्य है। वहाँ जंगल सफारी का आनंद लिया और रात का सफर शुरु हुआ क्योंकि हमारे पास नेपाल का भंसार (गाड़ी का परमिट) 9 दिन का ही था तो हमे 23 मार्च को नेपाल की सीमा से भारत में पहुँचना जरुरी था। अब दोपहर को 3 बजे हम फिर चितवन से सोनाली सीमा पर पहुचे । वहां सेक्युरिटी चेकिंग के बाद फिर वापस भारत में प्रवेश किया और फिर गोरखपुर में हमारी स्कूटर द्वारा विदेश यात्रा समाप्त करने का निर्णय लिया। गर्मी बढ़ने के कारण आगे स्कूटर से यात्रा करना सही नहीं था, तो रेलवे में स्कूटर पार्सल ऑफिस से मुंबई के लिये जमा करने के बाद, गोरक्षनाथ मंदिर के दर्शन करके हमारी यात्रा हवाई रास्ते से मुंबई में 26 मार्च को बिना किसी नुकसान और शारीरिक तकलीफ के पूर्ण हुई।

मेरे राजस्थान-आगरा यात्रा और लेह-लदाख यात्रा में मेरी पत्नी ने जिस हिम्मत और विश्वास से साथ दिया था, उसी हिम्मत और विश्वास से इस पूरे नेपाल के सफर में मेरा साथ दिया। इसी का फल है कि हम दोनो, भारत बुक ऑफ रेकॉर्ड में पहले कपल चुने गए जो कि 56 और 55 साल की उम्र में स्कूटर पर मुंबई से नेपाल जानेवाले भारतीय हैं।

मेरे सभी यात्रा में मेरे ऑफिस के साथी और अधिकारी ने जो प्रोत्साहन दिया, उसके लिए मैं सभी का आभारी हूं।

श्री नारायण गभाले
एम. टी. एस

रुह वाला प्रेम

सुबह की किरण वो रजनी का तारा
सदा टिमटिमाती वों तारों की माला ।
भरा ज्यूँ समुन्दर निगाहों में सारा
वही प्रेम है जो रहे रुह वाला ।।

है वो निराला नहीं मिटने वाला
बहती नदी की निर्मल सी धारा ।
चमन में खिला वो, कली प्यारा प्यारा
वही प्रेम है जो रहे रुह वाला ।।

सुहाने सफ़र की सुहानी डगर है
ये सारे ज़माने से यूँ बेखबर है।
समंदर की लहरें छुए जो किनारा
वही प्रेम है जो रहे रुह वाला ।।

जिस्मो सें बढकर साँसों में रहकर
सारे सितम को सहते हैं मिलकर।
भले जिस्म दो हों वो है ना अधूरा
वही प्रेम है जो रहे रुह वाला।।

सागर से गहरा शिखर से भी ऊँचा
ईश्वर ने खुद है ये तस्वीर खींचा
महकती हवा का सदा जो बहारा
वही प्रेम है जो रहे रुह वाला

श्री. राकेश कुमार सिंह,
स.ले.प.अ.

कुदरत की मार

कुदरत की मार इस कदर खायी इंसान ने
जीने के लिए तड़प आई इंसान में।।

कोरोना ने इस कदर धोया इंसान को
मानो इंसानियत ने ही खो दिया इंसान को।।

एक साल नहीं गुजरा तब तक आया नया मेहमान
सब बोले ओ माय-गॉड, ओ माय-क्रॉन (ओमीक्रान)
अब तो हद हो गई, हे भगवान।।

कोरोना काल में पहले ही बिना दवाई
जीने के लिए तड़प रहे थे।

वहीं अस्पतालवाले लूटने पे तुले थे।।
क्या समय आया है भगवान
जीने के लिए तड़प रहा इंसान......।।

श्री अंकुश आत्माराम बने
व. लेखा परिक्षक

कुरुक्षेत्र (धर्मक्षेत्र)

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चेव किमकुर्वत सञ्जय।।

कुरुक्षेत्र भारत में आर्यों के आरंभिक दौर में बसने (लगभग 1500 ई. पू.) का क्षेत्र रहा है और यह महाभारत की पौराणिक कथाओं से जुड़ा है । कुरुक्षेत्र का वर्णन श्रीमद्भगवदगीता के पहले श्लोक में धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के रुप में किया गया है। कुरुक्षेत्र एक महान ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का स्थान है जिसे वेदों और वैदिक संस्कृति के साथ जुड़े होने के कारण सभी देशों में श्रध्दा के साथ देखा जाता है। यह वह भूमि है जिस पर महाभारत की लड़ाई लड़ी गई थी और भगवान कृष्ण ने अर्जुन को ज्योतिसर में कर्म के दर्शन का उचित ज्ञान दिया था। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुरुक्षेत्र 48 कोस मे फैला एक विशाल क्षेत्र है, जिसमें कई तीर्थ स्थान, मंदिर और पवित्र तालाब शामिल हैं, जिनके साथ पाडवों और कौरवों और महाभारत युध्द से जुड़ी कई घटनाओं / अनुष्ठानों का संबंध रहा है। कुरुक्षेत्र का आर्य सभ्यता और पवित्र सरस्वती के उदय तथा इसके विकास से गहरा संबंध है। यह वह भूमि है जहाँ मनुस्मृति ऋषि मनु द्वारा लिखी गई थी और ऋग्वेद सामवेद का संकलन ज्ञानी ऋषियों द्वारा किया गया था । कुरुक्षेत्र का नाम राजा कुरु के नाम पर रखा गया था, जिसमें इस भूमि और इसके लोगों की समृध्दि के लिए महान बलिदान हुए।

महाभारत एवं कुछ पुराणों में कुरुक्षेत्र की सीमाओं के विषय में एक कतिपय अशुद्ध श्लोक आया है, यथा- तरन्तु एवं कारन्तुक तथा मचकुक (यक्ष की प्रतिमा) एवं रामह्रदों (परशुराम द्वारा बनाये गयें तालाबों) के बीच की भूमि कुरुक्षेत्र, समन्तपश्चक, एवं ब्रह्मा की उत्तरी वेदी है। इसका अर्थ यह है कि कुरुक्षेत्र कई नामों से व्यक्त हुआ है, यथा - ब्रह्मसर, रामहृद, समन्तपञ्चक, विनशन, सन्निहती। कुरुक्षेत्र की सीमा के लिए कनिंधम, टिप्पणी की है कि कुरुक्षेत्र अम्बाला के दक्षिण 30 मीलों तक तथा पानीपत के उत्तर 40 मीलों तक विस्तृत है।

प्राचीन काल में, वैदिक लोगों की संस्कृति एवं कार्य-कलापों का केन्द्र कुरुक्षेत्र था। क्रमशः वैदिक लोग पूर्व एवं दक्षिण की ओर बढ़े और गंगा-यमुना के देश में फैल गये तथा आगे चलकर विदेह (या मिथिला) भारतीय संस्कृति का केन्द्र हो गया।

कुरुक्षेत्र युध्द कौरवों और पाण्डवों के मध्य कुरु साम्राज्य के सिंहासन की प्राप्ति के लिए लड़ा गया था। महाभारत के अनुसार इस युध्द में भारत के प्रायः सभों जनपदों ने भाग लिया था। महाभारत व अन्य वैदिक साहित्यों के अनुसार यह प्राचीन भारत में वैदिक काल के इतिहास का सबसे बड़ा युध्द था। इस युध्द में लाखों क्षत्रिय वीरों ने भी भाग लिया और सब के सब वीर गति को प्राप्त हो गये। इस युध्द के परिणाम स्वरुप भारत में ज्ञान और विज्ञान दोनों के साथ-साथ वीर क्षत्रियों का अभाव हो गया। एक तरह से वैदिक संस्कृति और सभ्यता जो विकास के चरम पर थी उसका एकाएक विनाश हो गया। प्राचीन भारत की स्वर्णिम वैदिक सभ्यता इस युध्द की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो गयी। इस महान युध्द का उस समय के महान ऋषि और दर्शनिक वेदव्यास ने अपने महाकाव्य महाभारत में वर्णन किया, जिसे सहस्त्राब्दियों तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में गाकर एवं सुनकर याद रखा गया।

महाभारत में मुख्यतः चंद्रवंशियों के दो परिवार कौरव और पाण्डव के बीच हुए युध्द का वृत्तांत है। 100 कोरवों और पाँच पाण्डवों के बीच कुरु साम्राज्य की भूमि के लिए जो संघर्ष चला उससे अंततः महाभारत युध्द का सृजन हुआ। इस युध्द में पाण्डव विजयी हुए थे। महाभारत में इस युध्द को धर्मयुध्द कहा गया है, क्योंकि यह सत्य और न्याय के लिए लड़ा जाने वाला युध्द था। महाभारत काल से जुड़े कई अवशेष दिल्ली में "पुराना किला" में मिले है। पुराना किला को पाण्डवों का किला भी कहा जाता है। कुरुक्षेत्र में भी भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा महाभारत काल के बाण और भाले प्राप्त हुए हैं। गुजरात के पश्चिमी तट पर समुद्र में डूबे 7000-3500 वर्ष पुराने शहर खोजे गये हैं, जिनको महाभारत में वर्णित द्वारका के सन्दर्भों से जोड़ा गया। इसके अलावा बरनावा में भी लाक्षागृह के अवशेष मिले हैं। ये सभी प्रमाण महाभारत की वास्तविकता को सिध्द करते हैं।

श्री हेमंत
डी. ई. ओ

मैं और मेरी चाय

वक्त है अभी दोस्तों खुल के जी लो
सुबह हो गई, चलो चाय पी लो।

दो ही तो जरुरत है फिलहाल मेरी
एक मोबाइल और दूसरी चाय मेरी।

सांवला सा है रंग थोड़ा, कड़क सा मिजाज़ है
सुनो तुम पसंद हो हमें, तुम्हारा अलग सा स्वाद है।

सबने बेचैनी दे रखी है मुझे
बस एक चाय ही है जो सुकून देती है।

जब आशिकों ने अपनी-अपनी चाहत चुनी
तो कुछ ने इन्सान चुने और हमने चाय चुनी।

किसी से इश्क करने में अब वो बात नहीं
चाय जैसी महबूबा हर किसी के पास नहीं।

हर चीज़ अपने वक्त पर अच्छी लगती है
मगर ए चाय तू हर वक्त अच्छी लगती है।

लोग जिसे इश्क, इबादत, सुकून और ज़िन्दगी कहते हैं
एक लब्ज में हम उसे "चाय" कहते हैं।।

मधु सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

टयूलिप सिंह
सुपुत्री सुश्री मधु सिंह

प्रश्नोत्तरी

1. नोपैट को किसने प्रतिपादित किया ?
   क. स्टर्न स्टीवर्ट कंपनी
   ख. जोसेफ शुम्पीटर
   ग. मस्लोव
   घ. पीटर फर्नैंड ड्रकर

2. रचनात्मक विनाश (Creative Destruction) की अवधारणा किसने दी ?
   क. मस्लोव
   ख. जोसेफ शुम्पीटर
   ग. मोदिग्लिआनी मिलर
   घ. कार्ल मार्क्स

3. मोदिग्लिआनी मिलर का तर्क है कि लाभांश निर्णय
   क. अप्रासंगिक है क्योंकि फर्म का मूल्य उसकी संपत्ति की अर्जन शक्ति पर आधारित होता है ।
   ख. प्रासंगिक है क्योंकि फर्म का मूल्य केवल उसकी संपत्ति की अर्जन शक्ति पर आधारित नहीं है ।
   ग. अप्रासंगिक है क्योंकि लाभांश फर्म को शेयर धारकों के लिए शेष नकदीकरण का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वैसे भी फर्म के मालिक है ।
   घ. प्रासंगिक है क्योंकि नकद बहिर्वाह हमेशा अन्य दृढ़ निर्णयों को प्रभावित करता है ।

4. नकद के बदले शेयर धारकों को अतिरिक्त शेयरों का भुगतान है :
   क. स्टॉक विभाजन
   ख. शेयर लाभांश
   ग. अतिरिक्त लाभांश
   घ. नियमित लाभांश

5. लेखा का जनक निम्नलिखित में से कौन है ?
   क. लुका पर्सिओली
   ख. जेम्स टी कीर्क
   ग. चाणक्य
   घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

6. डबल एन्ट्री बुक-कीपिंग किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया ?

क. एंटोसाई

ख. इंस्टिट्यूट ऑफ़ चार्टड एकाउंटेंट्स ऑफ़ इंडिया

ग. लुका पर्सिओली

घ. वर्ल्ड बैंक

7. कुल फर्म जोखिम निम्लिखित में से कौन है ?

क. वित्तीय जोखिम +व्यापार जोखिम

ख. वित्तीय जोखिम + राजनीतिक जोखिम

ग. वित्तीय जोखिम +आर्थिक जोखिम

घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

8. प्रतिभूतियों को जारी करने वाली लागत जैसे अंडरराइटिंग, कानूनी लिस्टिंग और प्रिंटिंग फीस को कहते है ?

क. फ्लोटेशन लागत

ख. प्रतिधारण लागत

ग. भाग प्रतिफल

घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

9. एनरॉन घोटाले के पश्चात् कांग्रेस द्वारा जारी एक्ट कौन सा है ?

क. एंडरसन एक्ट

ख. सरबेनिस ऑक्सले अधिनियम

ग. मैग्ना कार्टा

घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

10. निम्लिखित में से कौन काल्पनिक संपति है ?

क. प्राथमिक खर्च

ख. प्राप्य खाते

ग. अर्जित सूद

घ. देय खाते

साभार : श्री. के. पी. यादव
(महानिदेशक)

(उपरोक्त पश्नों के उत्तर पृष्ठ सं.46 पर दिये गये हैं।)

कार्यालय में डॉ. बी. आर. आंबडेकर की प्रतिमा का अनावरण

प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. स्टर्न स्टीवर्ट कंपनी
2. जोसेफ शुम्पीटर
3. अप्रासंगिक है क्योंकि फर्म का मूल्य उसकी संपत्ति की अर्जन शक्ति पर आधारित होता है।
4. स्टॉक विभाजन
5. लुका पर्सिओली
6. लुका पर्सिओली
7. वित्तीय जोखिम + व्यापार जोखिम
8. फ्लोटेशन लागत
9. सरबेनिस ऑक्सले अधिनियम
10. प्राथमिक खर्च

कार्यालय में डॉ. बी. आर. आंबडेकर की प्रतिमा का अनावरण

मुखपृष्ठ :- कार्यालय महानिदेशक (कें) लेखापरीक्षा, मुंबई के परिसर में स्थापित भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की प्रतिमा जिसका अनावरण श्री. के. आर. श्रीराम (उपनियंत्रक एवं महालेखा परिक्षक) के कर-कमलों द्वारा दि. 1 मई 2022 को किया गया।

अंतिमपृष्ठ :- कार्यालय महानिदेशक (कें) लेखापरीक्षा, मुंबई के परिसर में स्थापित भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की प्रतिमा के अनावरण समारोह में उपस्थित श्री. के. आर. श्रीराम (उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक), महानिदेशक (कें), अन्यअधिकारी एवं समुह अधिकारीगण ।